04 - जी रामजी के विरोध के मायने

05 - साहित्यिक मंच पर सत्ता का दुरुपयोग

A Daily News Magazine

इंदौर

मंगलवार, 13 जनवरी, 2026

06 - अवसरों के बीच युवाओं के लिए गहराता संकट

07 - स्वामी विवेकानंद शिकागो जाने से पहले मध्यप्रदेश में थे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 103, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ईरान : रूसी और चीनी मीडिया में चुप्पी, सोशल मीडिया पर बवाल

ईरान में राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन तीसरे सप्ताह में प्रवेश कर गया है। देश के अधिकांश हिस्से में लोग ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामेनेई के शासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शनकारी कई प्रांतों में सड़कों पर उतरकर सरकार विरोधी रैलियां कर रहे हैं, जिसकी वजह बढ़ती महंगाई, आर्थिक तंगी और शासन को लेकर बढ़ता जन आक्रोश है। ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट्स न्यूज़ एजेंसी द्वारा रविवार को जारी किए गए नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, देश भर में 585 जगहों पर विरोध प्रदर्शन हुए, जो सभी 31 प्रांतों के 186 शहरों में फैले हुए थे। यह पंद्रह से भी ज्यादा दिनों से चल रहे इस आंदोलन की तीव्रता को दर्शाता है। इन विरोध प्रदर्शनों के बीच देश की अर्थव्यवस्था की हालत काफी खस्ता हो गई है और ईरान की करेंसी रियाल की वैल्यू अंतरराष्ट्रीय बाजार में काफी ज्यादा गिर गई है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ईरान के एक रियाल की यूरो की तुलना में वैल्यू जीरो हो गई है जबकि, एक यूरो की वैल्यू ईरान में 1.72 मिलियन रियाल के बराबर है। ईरान के कई शहरों में इंटरनेट सेवा बंद है। पश्चिमी देशों और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों ने प्रदर्शन के दौरान हिंसा को लेकर ईरानी सरकार की कार्रवाइयों की निंदा की है। वहीं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी ताज़ा टिप्पणी में ईरान को चेतावनी दी है कि अगर वो प्रदर्शनकारियों को मारना शुरू करती है तो अमेरिका कार्रवाई करेगा। उन्होंने कहा, 'हम उन्हें वहीं करारा प्रहार करेंगे जहां उन्हें सबसे ज्यादा दर्द होता है। और इसका मतलब (ईरान में) सैन्य उपस्थिति नहीं है, इसका मतलब है उन पर वहीं बहुत करारा प्रहार करना जहां उन्हें सबसे ज़्यादा तकलीफ़ होती है।'

जबकि ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह अली खामेनेई ने इन प्रदर्शनों को 'ट्रंप को खुश करने वाला' बताया और ट्रंप की तुलना एक तानाशाह से की है। ईरान में जारी प्रदर्शनों की ख़बरें अंतरराष्ट्रीय मीडिया में सुर्खियों में है और इसराइल में इन प्रदर्शनों को बहुत दिलचस्पी से देखा जा रहा है। विरोध प्रदर्शनों को देखते हुए भारतीय विदेश मंत्रालय ने अपने नागरिकों के लिए ट्रैवल एडवाइज़री जारी की है और ईरान में मौजूद भारतीय नागरिकों को प्रदर्शनों वाली जगहों से दूर रहने और सावधानी बरतने को कहा है। ईरान के मौजूदा विरोध प्रदर्शनों पर इसराइली मीडिया में मिली-जुली प्रतिक्रिया है और उत्साह के बावजूद संयमित टिप्पणियां की जा रही हैं। दक्षिणपंथी अख़बार इसराइल हायोम और चैनल 12 न्यूज़ ने कहा कि ईरान 'उबाल के बिंदु' पर है। चैनल 12 न्यूज़ ने प्रदर्शनों में तेज़ी को ईरान के आख़िरी शाह के निर्वासित बेटे रज़ा पहलवी की उस अपील से जोड़ा, जिसमें उन्होंने देश के नेतृत्व के खिलाफ़ प्रदर्शन करने का आह्वान किया था।

चीन के अधिकारियों और देश के मीडिया ने ईरान में हो रहे राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शनों के प्रति बेहद सतर्क रुख़ अपनाया है। सरकारी मीडिया में भी विरोध प्रदर्शनों को बहुत सीमित कवरेज दी गई है। बीबीसी पर्शियन के मुताबिक़, इन विरोध प्रदर्शनों की खबरें चाइना टेलीविजन के प्रमुख समाचार कार्यक्रम में नहीं दिखाई गई हैं। एकमात्र आधिकारिक टिप्पणी को भी विदेश विभाग की वेबसाइट से हटा दिया गया है। बीजिंग की ओर से अब तक की एकमात्र सार्वजनिक टिप्पणी 5 जनवरी को आई थी जिसमें चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने कहा, 'हम आशा करते हैं कि ईरानी सरकार और लोग मौजूदा कठिनाइयों को दूर कर राष्ट्रीय स्थिरता बनाए रख सकेंगे।'

बीबीसी पर्शियन के मुताबिक़, वेनेज़ुएला में निकोलस मादुरो की गिरफ़्तारी पर जिस तरह चीन के सरकारी मीडिया में ख़बरों की लहर थी, वैसा कुछ ईरान के विरोध प्रदर्शनों को लेकर नहीं दिख रहा है। चीन के कुछ ब्लॉगरों ने ईरान में जारी विरोध प्रदर्शन पर टिप्पणियां प्रकाशित की हैं और चीन को इससे दूर रहने की बात कही है। कई चीनी सोशल मीडिया यूज़र्स ने पिछले साल जून में ईरान-इसराइल के बीच संघर्ष के दौरान ईरान पर नरम और कमज़ोर होने के आरोप लगाए।

एक ब्लॉग में वॉशिंगटन पर दोहरा मापदंड अपनाने का आरोप लगाया गया है और लिखा गया है, 'मौजूदा शासन गिरे या न गिरे, ईरानी लोगों के लिए उज्ज्वल भविष्य की संभावना कम ही है।'

एक अन्य लेख, जिसका शीर्षक था 'ईरान को अपने पैरों पर खड़ा होना होगा; चीन की मदद के बारे में सोचना भी मत।' इसमें इस बात पर ज़ोर दिया गया कि चीन को 'किसी भी परिस्थिति में' तेहरान की सहायता के लिए नहीं आना चाहिए।

चीन की तरह ही रूस की मीडिया में भी ख़ास कवरेज नहीं है। सरकारी मीडिया आरटी में आठ जनवरी को ईरान में इंटरनेट पाबंदी पर एक ख़बर प्रकाशित हुई। ख़बर में कहा गया है कि महंगाई बढ़ने पर और ईरानी मुद्रा के कमज़ोर होने के ख़िलाफ़ पिछले महीने के अंत से शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन कई शहरों तक पहुंचा। रूस की सरकारी न्यूज़ एजेंसी तास में ईरान विरोध प्रदर्शनों को कवर किया जा रहा है। हालांकि इन प्रदर्शनों को ईरानी सरकार की तर्ज पर दंगा कहा जा रहा है।

हालांकि मुख्यधारा में ख़ास चर्चा नहीं होने के बावजूद ब्लॉग और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों पर अमेरिकी विरोधी नैरेटिव देखने को मिल रहा है। रूस के एक टीवी प्रस्तोता और टिप्पणीकार रुस्लान ओस्ताश्को ने अपने टेलीग्राम चैनल पर चेतावनी दी कि वेनेज़ुएला के बाद ईरान और यहां तक कि रूस भी 'अमेरिकी तेल श्रृंखला' के अगले निशाने पर हो सकते हैं। दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडार वाले देशों का एक चार्ट प्रकाशित करते हुए, उन्होंने ईरानी विरोध प्रदर्शनों को घरेलू असंतोष की बजाय अमेरिका के लिए ईरान के तेल संसाधनों पर कब्ज़ा करने का एक अवसर बताया।

सैन्य और सुरक्षा मामलों पर रूस के लोकप्रिय टेलीग्राम चैनल रेबार ने दावा किया कि ईरानी सुरक्षा बल 'स्थिति पर समग्र नियंत्रण' में हैं, लेकिन अमेरिका और पश्चिमी मीडिया पर अशांति को भड़काने के लिए 'लक्षित दुष्प्रचार' का आरोप लगाया। चैनल ने ब्रिटेन के अखबार द टाइम्स में छपी उस रिपोर्ट को खारिज कर दिया जिसमें कहा गया था कि सर्वोच्च नेता अली खामेनेई पश्चिमी मनोवैज्ञानिक युद्ध के तहत ईरान छोड़कर मॉस्को जा सकते हैं।

(बीबीसी हिंदी की रिपोर्ट सहित अन्य मीडिया खबरों पर आधारित)

इसरो का रॉकेट रास्ते से भटका, मिशन फेल

आई गड़बड़ी,अर्बिट में नहीं तैनात हो पाया अन्वेषा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन (इसरो) का साल 2026 का पहला मिशन पीएसएलवी-सी 62 फेल हो गया है। रॉकेट 12 जनवरी को सुबह 10.18 बजे आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित अंतरिक्ष केंद्र से 16 सैटेलाइट लेकर उड़ा था। इसरो चीफ डॉ. वी नारायणन ने कहा कि रॉकेट लॉन्चिंग के तीसरे चरण में गड़बड़ी आ गई, जिसके कारण वह रास्ता भटक गया। पिछले साल 18 मई को भी इसरो का पीएसएलवी-सी 61

मिशन तकनीकी खराबी के कारण तीसरी स्टेज में ही फेल हुआ था। इस मिशन में ईओएस-09 अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट को 524 किमी की सन-सिंक्रोनस पोलर ऑर्बिट में स्थापित किया जाना था। श्रीहरिकोटा से सुबह 10.18 बजे की स्मूथ लॉन्च हुई। इसके बाद ये घटनाएं घटी। इसरो के चेयरमैन वी. नारायणन ने फ्लाइट के बाद एक अपडेट में बताया, मिशन में एक टेक्निकल गड़बड़ी हुई है। शुरुआती फ्लाइट स्टेज तो ठीक थे, लेकिन तीसरे स्टेज में चैंबर प्रेशर में अचानक गिरावट आई।

पीएम मोदी जर्मन चांसलर से मिले | साथ मिलकर उड़ाई पतंग

पीएम ने कहा-भारत-जर्मनी करीबी सहयोगी,भारत में 2000 से ज्यादा जर्मन कंपनियां

अहमदाबाद (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज के बीच सोमवार को गांधीनगर के महात्मा मंदिर कनवेंशन सेंटर में द्विपक्षीय वार्ता हुई। वार्ता के बाद पीएम ने कहा- भारत-जर्मनी करीबी सहयोगी हैं। इसीलिए आज भारत में 2000 से ज्यादा जर्मन कंपनियां हैं। यह जर्मनी के भारत के प्रति अटूट विश्वास को दर्शाता है। भारत और जर्मन नई परियोजनाओं को आगे बढ़ा रहे हैं। भारत और जर्मनी हरेक फील्ड में मिलकर काम कर रहे हैं। आज हुए एमओयू से और मजबूती बढ़ेगी। भारत और जर्मनी हरेक फील्ड में मिलकर काम कर रहे हैं। आज हुए एमओयू से और मजबूती बढ़ेगी। चांसलर मर्ज की ये यात्रा एक विशेष समय पर हो रही है। पिछले वर्ष हमने अपनी रणनीतिक साझेदारी के 25 वर्ष पूरे किए और

इस वर्ष हम अपने राजनयिक संबंधों के 75 वर्ष भी मना रहे हैं। भारत-जर्मनी की अर्थव्यवस्थाओं के बीच करीबी सहयोग पूरी मानवता के लिए महत्वपूर्ण है। रक्षा व्यापार से जुड़ी प्रक्रियाओं को सरल बनाने के लिए मैं चांसलर मर्ज का आभार व्यक्त करता हूं। रक्षा और सुरक्षा में बढ़ता सहयोग हमारे आपसी भरोसे और साझी सोच का प्रतीक है। बढ़ते व्यापार और निवेश संबंधों ने हमारी टीम को नई ऊर्जा दी है।

दोनों नेता सुबह साबरमती आश्रम पहुंचे

दोनों नेताओं ने सोमवार सुबह सबसे पहले अहमदाबाद में साबरमती आश्रम पहुंचकर महात्मा गांधी को नमन किया था। आश्रम के बाद मोदी-मर्ज साबरमती रिवरफ्रंट पहुंचे थे। यहां पर इंटरनेशनल काइट फेस्टिवल में शामिल होकर साथ में पतंग उड़ाई थी। वहीं, पीएम मोदी के तीन दिन के गुजरात दौरे का आज आखिरी दिन है। पीएम दोपहर 2.30 बजे दिल्ली के लिए रवाना होंगे। आश्रम का दौरा करने के बाद फ्रेडरिक मर्ज ने गेस्ट बुक ने लिखा- महात्मा गांधी की अहिंसा की अवधारणा, स्वतंत्रता की शक्ति में उनका विश्वास और हरेक व्यक्ति की गरिमा में उनकी आस्था आज भी लोगों को प्रेरित करती है।

शरद की सुबह

पता नहीं क्यों
जब मैं नदी देखता हूँ
नदी की लहर
हो जाता हूँ
जब मै उगता सूरज
देखता हूँ
खुद प्रकाशमय
हो जाता हूँ
जब मैं हराभरा
पेड़ देखता हूँ
मेरा जीवन
हराभरा हो जाता है
जब मैं कोयल की
कूक सुनता हूँ
मेरे अंदर
संगीत गूंजने लगता है
जब मैं चिड़िया की
चहक सुनता हूँ
बच्चों की तुतली बोली
मेरे अंदर
लहराने लगती है
पता नहीं क्यों ?

-दुर्गाप्रसाद झाला

राष्ट्रीय युवा दिवस -स्वामी विवेकानंद की 163वीं जयंती

स्वामी विवेकानंद ने अपने विचारों से राष्ट्र के युवाओं में नई ऊर्जा का किया संचार : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय युवा दिवस - 12 जनवरी स्वामी विवेकानंद की 163वीं जयंती मनाई गई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वामी विवेकानंद जी ने अपने विचारों से राष्ट्र के युवाओं में नई ऊर्जा का संचार किया। वे एक महान चिंतक थे और केवल शरीर से बल्कि कर्म से भी युवा थे। उन्होंने कहा कि योग हमारी भारतीय परंपरा का हिस्सा है। सूर्य नमस्कार की यौगिक क्रियाएं हमारे संपूर्ण जीवन का निचोड़ है। यह केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि हमारे जीवन को सामान्यता से उत्कृष्टता की ओर लेकर जाने का बड़ा माध्यम है। हम रोजाना सूर्य नमस्कार में समाहित 12 योग क्रियाओं के जरिए ही अपने शरीर को निरोगी बनाकर सुखी रह सकते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी) के अवसर पर भोपाल के शासकीय सुभाष उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय

सामूहिक सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने योगाचार्यों के मार्गदर्शन में सुभाष स्कूल के सभी बच्चों के साथ सूर्य नमस्कार के 12-12 क्रियाओं के तीन चक्र और प्राणायाम भी किया। उन्होंने कहा कि योग सदियों से हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। इससे पहले मुख्यमंत्री डॉ. यादव एवं अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन और माँ सरस्वती एवं स्वामी विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया।

एक संकेत पर, एक साथ हुआ सामूहिक सूर्य नमस्कार और प्राणायाम- सुभाष स्कूल में सुबह राष्ट्रगीत वंदेमातरम् गायन के साथ राज्य स्तरीय सामूहिक सूर्य नमस्कार कार्यक्रम की शुरूआत हुई। कार्यक्रम में स्वामी विवेकानंद जी द्वारा अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में दिए गए उनके ऐतिहासिक संबोधन का प्रसारण भी किया गया। तदुपरांत सभी ने एक समय में, एक संकेत पर, एक साथ सामूहिक सूर्य नमस्कार और प्राणायाम किया। इस कार्यक्रम का आकाशवाणी के सभी केन्द्र के जरिए प्रदेशभर के स्कूलों में सीधा प्रसारण किया गया। जिलों में भी योगधर्मियों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने दिए गए मार्गदर्शन के अनुसार सामूहिक सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम क्रियाओं का अभ्यास किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान जन-गण-मन के साथ हुआ। उल्लेखनीय है कि स्वामी विवेकानंद की जयंती (राष्ट्रीय युवा दिवस) के अवसर पर पहली बार वर्ष 2007 में राज्य स्तरीय सूर्य नमस्कार कार्यक्रम की शुरुआत हुई थी। तब से लगातार यह आयोजन हो रहा है।

नशे की लत और जंक फूड से बनाएं दूरी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्वाध्याय भी ज्ञान अर्जन का एक सशक्त माध्यम है। सभी को स्वाध्याय करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी नशे की लत और जंक फूड से हमेशा के लिए दूरी बनाएं। जंक फूड शरीर को विकृति की ओर ले जाते हैं। इन्हें कम से कम खाएं। पेड़ लगाएं। प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा शारीरिक व्यायाम के लिए अवश्य निकालें। अपना कोई एक पसंदीदा खेल जरूर खेलें। महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील रहें। अपने व्यक्तित्व के साथ चरित्र का भी निर्माण करें। अपनी भावनाएं परिवार और दोस्तों के साथ साझा करें, हताशा से नहीं, हमेशा आशा से भरे रहें। आधुनिकतम तकनीक का पूरी समझ और संवेदनाओं के साथ उपयोग करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति वसुधैब कुटुम्बकम की परोपकारी भावना पर आधारित है। हम सब अपने जीवन के प्रत्येक पल को आनंद से जिएं। मानवता, समाज, प्रकृति और खुद के साथ दूसरों का जीवन बेहतर बनाने की भावना के साथ आगे बढ़ें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज से 1000 साल पहले गजनी के महमूद ने भगवान सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण कर उसे नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयास किया था। हमें गर्व है कि भारतीय संस्कृति का यह जीवंत प्रतीक पूरे गौरव के साथ चट्टान की तरह आज भी खड़ा है।

जमानत पर रहम दिल सुप्रीम कोर्ट ने खींची लक्ष्मण रेखा

पॉक्सो केस में बेल पर फैसला पलटा,जमानत से इनकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले कुछ वर्षों से जमानत को एक सामान्य नियम बनाने की कोशिश की है, जिसमें आरोपियों को ट्रायल के चक्कर में ज्यादा दिनों तक जेल में रखने के खिलाफ दृष्टिकोण अपनाया गया है। गंभीर से गंभीर अपराधों के मामले में भी सुप्रीम कोर्ट ने बेल देने में हिचकिचाहट नहीं दिखाई है लेकिन, हाल में कुछ ऐसे मामले सामने आए हैं, जिसने सर्वोच्च अदालत को अपना नजरिया बदलने को मजबूर कर दिया है और ऐसे केस में उसने बेल पर सामान्य नजरिए से

अलग हटकर आदेश दिए हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार हाल ही में सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस बी वी नागरत्ना और जस्टिस आर महादेवन की बेंच ने प्रिवेंशन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंसेज एक्ट से जुड़े एक मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट के जमानत के एक आदेश को पलट दिया। इस केस में आरोपी पर एक नाबालिग बच्ची से रेप और सेक्सुअल असॉल्ट का आरोप है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि हाई कोर्ट का आदेश विकृत और अनुचित है, और साथ ही इसमें जरूरी बातों को नजरअंदाज किया गया है।

अपराध की प्रकृति, गंभीरता देखना जरूरी- सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट से जमानत के आदेश के खिलाफ दायर अपील पर कहा, यह एक स्थापित कानून है कि सिर्फ चार्जशीट दायर होने का मतलब ये नहीं है कि बेल याचिका पर विचार के लिए इतना ही काफी है। ऐसी याचिका पर विचार करते समय कोर्ट की यह ड्यूटी है कि वह अपराध की प्रकृति,उसकी गंभीरता और जांच के दौरान जुटाए गए मटेरियल पर भी पूरा ध्यान दे। जस्टिस नागरत्ना और जस्टिस महादेवन की बेंच ने आगे कहा कि मौजूदा मामले में अपराध के आरोप जघन्य और गंभीर हैं, जिसमें एक नाबालिग पीड़िता को हथियार दिखाकर और धमका कर बार-बार सेक्सुअल असॉल्ट किया गया और ब्लैकमेल करने के इरादे से इन हरकतों की रिकॉर्डिंग भी की गई। ऐसा व्यवहार पीड़िता के जीवन पर बहुत बुरा असर डालता है और यह समाज की सामूहिक चेतना को भी झकझोर देता है।

बेल के ऐसे मामलों में दखल देना जरूरी

इस मामले में हाई कोर्ट के आदेश को दरकिनार करते हुए जस्टिस महादेवन ने अपने फैसले में लिखा है,हाई कोर्ट ने आरोपी को जमानत देते समय, अपराधों की प्रकृति और गंभीरता और पीओसीएसओ एक्ट के प्रावधानों के तहत वैधानिक सख्ती पर ध्यान नहीं दिया। अदालत ने कहा कि जरूरी चीजों पर ठीक से बिचार किए बिना ही दी गई जमानत में दखल देना जरूरी है। इस मामले में पुलिस के मुताबिक आरोपी नाबालिग पीड़िता को जानता था। उसने अपने दोस्तों के साथ नाबालिग के साथ 6 महीने से ज्यादा समय तक सेक्सुअल असॉल्ट किया। कथित रूप से यह वारदात कट्टा दिखाकर होता रहा और मोबाइल फोन पर ब्लैकमेल के इरादे से पीड़िता की रिकॉर्डिंग भी कर ली गई। पुलिस ने शुरू में आनाकानी के बाद 2 दिसंबर, 2024 को एफआईआर दर्ज की। जब आरोपी को सेशन कोर्ट से जमानत नहीं मिली, तो वह इलाहाबाद हाई कोर्ट पहुंचा।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 13 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बांग्लादेश में हिंदू सिंगर की इलाज न मिलने से मौत

- जेल में बंद थे, अस्पताल में दम तोड़ा, परिवार ने लापरवाही का आरोप लगाया

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में जेल में बंद एक हिंदू सिंगर की पर्याप्त इलाज न मिलने से मौत हो गई। मृतक की पहचान प्रोलय चाकी के रूप में हुई है। परिवार ने आरोप लगाया है कि जेल में रहते हुए उन्हें समय पर और पर्याप्त इलाज नहीं मिला। चाकी ने रविवार रात (11 जनवरी) करीब 9 बजे राजशाही मेडिकल कॉलेज अस्पताल में दम तोड़ा। वह पाबना जिला जेल में बंद थे और शुक्रवार को तबीयत बिगड़ने के बाद अस्पताल में भर्ती कराए गए थे। जेल प्रशासन के मुताबिक, शुक्रवार सुबह प्रोलय चाकी को दिल का दौरा पड़ा था। इसके बाद उन्हें पहले पाबना जनरल अस्पताल ले जाया गया और बाद में

बेहतर इलाज के लिए राजशाही मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर किया गया, जहां रविवार रात उनकी मौत हो गई। पाबना जिला जेल के सुपरिटेंडेंट मोहम्मद ओमर फारुक ने बताया कि प्रोलय चाकी पहले से ही डायबिटीज समेत कई बीमारियों से पीड़ित थे। उनके मुताबिक, तबीयत बिगड़ते ही इलाज की प्रक्रिया शुरू की गई थी और किसी तरह की देरी नहीं हुई। मृतक के बेटे और म्यूजिक डायरेक्टर सानी चाकी ने जेल प्रशासन के दावों को खारिज किया है। उनका कहना है कि उनके पिता को डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, हृदय रोग और आंखों की गंभीर समस्या थी, इसके बावजूद जेल में ठीक से इलाज नहीं कराया गया।

सांबा, राजौरी और पुंछ में एलओसी पर दिखे 5 ड्रोन

- दावा-पाकिस्तान घुसपैठ की कोशिश में, सेना का काउंटर अटैक, सर्चिंग जारी

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के सांबा, राजौरी और पुंछ में पाकिस्तान से लगी सीमा और लाइन ऑफ कंट्रोल के पास रविवार शाम करीब 5 ड्रोन दिखाई दिए। न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक राजौरी में नौशेरा सेक्टर में तैनात जवानों ने शाम करीब 6.35 बजे गनिया-कलसियां गांव के ऊपर ड्रोन देखा। इसके बाद मीडियम और लाइट मशीन

गन से फायरिंग की। राजौरी के तेरियाथ के खब्बर गांव में शाम 6.35 बजे एक और ड्रोन देखा गया। यह ड्रोन कलाकोट के धर्मसाल गांव की तरफ से आया और आगे भरख की ओर बढ़ गया। वहीं, सांबा के रामगढ़ सेक्टर में चक बबरल गांव के ऊपर शाम करीब 7.15 बजे ड्रोन जैसी चीज कुछ मिनट तक मंडराती दिखी। पुंछ में भी मनकोट सेक्टर में शाम 6.25 बजे तैन से टोपा की ओर ड्रोन जैसी एक और चीज जाती हुई देखी गई। फॉरवर्ड इलाकों में संदिग्ध ड्रोन की हलचल दिखने के बाद सुरक्षा बलों ने इलाकों में सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है। इससे पहले 9 जनवरी को सांबा में एलओसी के पास घगवाल के पालूरा गांव में हथियार की खेप मिली थी, जिसे पाकिस्तान से आए ड्रोन ने गिराया था।

रायसीना हिल्स के पास नया पीएमओ ऑफिस तैयार

- यहीं पर नया आवास भी बन रहा, एक युग का होगा अंत

मोदी इस महीने शिफ्ट हो सकते हैं, दो मुहूर्त निकाले गए

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के रायसीना हिल्स के पास देश के प्रधानमंत्री का नया ऑफिस लगभग तैयार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस महीने

के अंत तक नए ऑफिस से काम शुरू कर सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि पीएमओ का काम लगभग पूरा हो चुका है। फाइनल फिनिशिंग जारी है। सूत्रों ने बताया कि पीएम ऑफिस में शिफ्टिंग के लिए इस महीने दो मुहूर्त निकाले गए हैं। पहला 14 जनवरी, मकर संक्रांति के दिन और दूसरा 19 जनवरी से 27 जनवरी के बीच, गुप्त नवरात्रि तक है। हालांकि, तब तक फिनिशिंग का काम पूरा नहीं हुआ, तो फरवरी में भी शिफ्टिंग हो सकती है। पीएम का नया ऑफिस सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट के तहत बनाया गया है। नए पीएमओ के पास ही प्रधानमंत्री का नया आवास भी बन रहा है। इसके तैयार होने के बाद प्रधानमंत्री 7, लोक कल्याण मार्ग स्थित मौजूदा आवास से भी नए आवास में शिफ्ट होंगे। एग्जीक्यूटिव एन्क्लेव नाम रखा गया था।

घमंडी अमेरिका ने मान ली भारत की ताकत

- चीन से मुकाबले के लिए झुका, आज से होगी बात
- राजदूत गोर बोले-अगले साल भारत आ सकते हैं ट्रंप

अमेरिका की अगुवाई वाला पैक्स सिलिका क्या है, जिसमें भारत को शामिल किया जाएगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और अमेरिका के बीच 13 जनवरी को फिर से ट्रेड डील को लेकर बात शुरू हो सकती है। भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने सोमवार को नई दिल्ली में पदभार ग्रहण करते हुए ये संकेत दिए। उन्होंने कहा कि भारत-अमेरिका संबंध सच्ची दोस्ती पर आधारित हैं और उन्होंने दोनों देशों के बीच व्यापार वार्ता जारी रखने का संकेत दिया। गोर ने कहा-सच्चे दोस्त असहमत हो सकते हैं, लेकिन मतभेदों को सुलझा लेते हैं। उन्होंने चल रही व्यापार वार्ता को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच विश्वास पर निर्मित व्यापक और मजबूत साझेदारी का हिस्सा बताया। भारत को 500 फीसदी टैरिफ लगाने की धमकी देने वाले घमंडी ट्रंप ने आखिरकार

भारत की ताकत का लोहा मान लिया है। तभी तो अमेरिका की अगुवाई वाले पैक्स सिलिका समूह में अगले महीने शामिल होने के लिए ट्रंप प्रशासन न्योता भेजने वाला है। अमेरिकी राजदूत गोर ने पुष्टि की कि भारत और अमेरिका व्यापार मुद्दों पर सक्रिय रूप से बातचीत जारी रखे हुए हैं और वार्ता का अगला दौर 13 जनवरी को होने की उम्मीद है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि टैरिफ और बाजार पहुंच पर मतभेदों के बावजूद दोनों पक्ष नियमित संपर्क में हैं। एक महत्वपूर्ण घोषणा में गोर ने कहा कि भारत को अगले महीने अमेरिका के नेतृत्व वाले पैक्ससिलिका समूह में पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। यह कदम वैश्विक प्रौद्योगिकी और इनोवेशन इकोसिस्टम में भारत की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है। पैक्स सिलिका, अमेरिकी विदेश विभाग की आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी और सप्लाई-चेन सुरक्षा पर आधारित प्रमुख पहल है, जो सहयोगी देशों और विश्वसनीय साझेदारों के बीच नई सहमति को बढ़ावा देती है।

सीईसी, चुनाव आयुक्तों को 'लाइफटाइम इम्यूनिटी'!

सीजेआई बोले-जांच करेंगे, केन्द्र-ईसी को भेजा नोटिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति की प्रक्रिया और सेवा शर्तों को चुनौती देने वाली एक याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और चुनाव आयोग को नोटिस जारी किया है। याचिका में सीईसी और चुनाव आयुक्तों को मुकदमे से आजीवन छूट के प्रावधान को चुनौती दी गई है। सुप्रीम कोर्ट ने इस याचिका पर कहा है कि वह इस मामले की जांच करना चाहेगा। यही नहीं, इस याचिका में सीईसी और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया पर भी सवाल उठाया गया है। सुप्रीम कोर्ट में भारत के चीफ जस्टिस (सीजेआई) सूर्यकांत की अगुवाई वाली बेंच ने इस मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि हम इसकी जांच करना चाहेंगे। हम नोटिस जारी कर रहे हैं। नोटिस के जरिए केंद्र और चुनाव आयोग से मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त (नियुक्ति, सेवा शर्तें और कार्यकाल) अधिनियम,2023 के तहत उनका पक्ष मांगा गया है। याचिका में संसद से पारित कानून की संवैधानिक वैधता को चुनौती दी गई है। इसमें दावा किया गया है कि इस कानून से कथित तौर पर सीईसी और ईसी को अप्रत्याशित सुरक्षा मिलती है। याचिकाकर्ता के अनुसार इस कानून की वजह से इन अधिकारियों को अपनी ड्यूटी के दौरान किए गए सभी सिविल और आपराधिक कार्रवाइयों से छुटकारा मिल जाता है।

संसद के अधिकार को दी गई है चुनौती

याचिका में याचिकाकर्ता ने कोर्ट के सामने वकील के जरिए दलील दी है कि यह विधेयक सीईसी और चुनाव आयुक्तों को जीवन भर के लिए ऐसी अभूतपूर्व शक्ति नहीं दे सकता है, जो संविधान निर्माताओं ने जजों को भी नहीं दी। संसद इस तरह की छूट नहीं दे सकती, जो संविधान निर्माताओं ने दूसरे बड़े पदाधिकारियों को भी नहीं दी। इस याचिका में लाइफटाइम इम्यूनिटी के अलावा चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया पर भी सवाल उठाया गया है। 2023 के कानून के तहत सीईसी और चुनाव आयुक्तों के सेलेक्शन पैनल में प्रधानमंत्री, लोकसभा में विपक्ष के नेता और प्रधानमंत्री की ओर से नामित एक केंद्रीय मंत्री होते हैं।

आई-पैक छापेमारी विवाद 'सुप्रीम' शरण में ईडी

कहा-हमसे सबूत छीनकर ले गईं, मामले की सीबीआई जांच हो

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने टीएमसी के आईटी हेड प्रतीक जैन के घर छापेमारी मामले में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और राज्य के शीर्ष पुलिस अधिकारियों के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। इन पर रेड के दौरान हस्तक्षेप करने और सबूत मिटाने का आरोप लगाया गया है। जांच एजेंसी ने इस पूरे मामले की जांच सीबीआई से कराने की मांग की है। दरअसल, 8 जनवरी को ईडी ने अवैध कोयला खनन से जुड़े मामले की जांच के तहत कोलकाता में प्रतीक की पॉलिटिकल स्ट्रैटजिक कंपनी आई-पैक से जुड़े ठिकानों पर तलाशी ली गई थी। ईडी ने आरोप लगाया कि रेड के दौरान सीएम, मुख्य सचिव, डीजीपी, कोलकाता पुलिस कमिश्नर मौके पर पहुंचे और ईडी के अधिकारियों को डराया। फाइलें और इलेक्ट्रॉनिक सबूत जबरन छीन लिए गए और तलाशी नहीं करने दी गई। ईडी का कहना है कि यह पहली बार नहीं हुआ है। जब भी किसी जांच में मुख्यमंत्री या उनसे जुड़े लोगों के खिलाफ कोई अहम सबूत मिलने की संभावना होती है,तब उनकी सरकार और वरिष्ठ अधिकारी काम में दखल देते हैं।

यूपी-बिहार वाले महाराष्ट्र में हिंदी न थोपें, वरना लात मारूंगा

राज ठाकरे बोले-मुंबई गुजरात को नहीं मिला, इससे कुछ ताकतें अब भी नाराज

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना चीफ राज ठाकरे ने रविवार को आगामी बृहन्मुंबई महानगरपालिका चुनाव को लेकर दादर स्थित शिवतीर्थ मैदान में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने मराठी एकता का आह्वान किया और कहा कि राज्य की भाषा, जमीन और पहचान पर खतरा है। राज ठाकरे ने कहा- उत्तर प्रदेश और बिहार से आए लोगों को महाराष्ट्र में हिंदी थोपने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। मुझे किसी भाषा से नफरत नहीं है, लेकिन अगर इसे थोपने की कोशिश करोगे तो मैं आपको लात मारूंगा। एमएनएस प्रमुख ने कहा- कुछ ताकतें अभी भी इस बात से नाराज हैं कि मुंबई, गुजरात के बजाय महाराष्ट्र को मिल गया। वे अब अडाणी ग्रुप के जरिए मुंबई और मुंबई मेट्रोपॉलिटन रीजन पर कंट्रोल हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं।

चार्टर्ड प्लेन से दिल्ली आए अभिनेता विजय थलपति

करूर भगदड़ मामले में सीबीआई के सामने हुए पेश

चेन्नई/नई दिल्ली (एजेंसी)। टीवीके प्रमुख एक्टर विजय सोमवार को करूर भगदड़ मामले में सीबीआई के समक्ष पूछताछ के लिए पेश हुए। सीबीआई के अधिकारियों ने बताया कि तमिलगा वेत्री कझगम (टीवीके) प्रमुख एवं अभिनेता विजय करूर भगदड़ मामले के संबंध में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के समक्ष पूछताछ के लिए सोमवार को पेश हुए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। टीवीके चीफ की सीबीआई के सामने पेशी ऐसे वक्त पर हुई है जब तमिलनाडु में विधानसभा चुनावों के लिए सरगर्मी तेज हो गई है। सूत्रों के अनुसार सीबीआई ने एक्टर विजय से पूछा कि वह भगदड़ की बड़ी घटना के बाद घटनास्थल छोड़कर से क्यों चले गए। इतना ही नहीं वह देरी से कार्यक्रम में क्यों पहुंचे। सीबीआई सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर करूर भगदड़ की जांच कर रही है। तमिल अभिनेता सोमवार सुबह ही तमिलनाडु से दिल्ली के लिए रवाना हुए थे। वह विशेष विमान से पहले दिल्ली और फिर सीबीआई मुख्यालय पहुंचे।

हिमाचल के सोलन में भीषण आग, बच्चा जिंदा जला

- 10 लापता, क्षत-विक्षत हालत में मिल रहे शरीर, 8 मकान राख

अर्की (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले के अर्की बाजार में रविवार आधी रात भीषण आग भड़की। इस हादसे में आठ साल के एक बच्चे की जिंदा जलकर मौत हो गई। एसएसपी निशांत तोमर ने बताया कि कुछ के क्षत-विक्षत हालत में शरीर के अंग जैसे हाथ-टांगे इत्यादि मिल रहे हैं। एसएसपी ने बताया कि 10 के करीब लोगों के लापता होने की सूचना है। इनमें 5 महिलाएं व बच्चे भी शामिल है। प्रशासन ने लापता लोगों की तलाश में सुबह से ही सर्च एंड रेस्क्यू ऑपरेशन चला रखा है। घटनास्थल पर जेसीबी से मलबा निकाला जा रहा है। एनडीआरएफ, पुलिस और होमगार्ड जवान राहत एवं बचाव कार्य में जुटे हैं।

फरीदाबाद की अल-फलाह यूनिवर्सिटी की मुसीबत बढ़ी

- ईडी परिसर को कर सकती है कुर्क, प्रोसीड्स ऑफ क्राइम से पैसे जुटाने का शक

फरीदाबाद (एजेंसी)। दिल्ली ब्लास्ट के आतंकी मॉड्यूल से जुड़े मामले में फरीदाबाद स्थित अल-फलाह यूनिवर्सिटी की मुश्किलें और बढ़ सकती हैं। एक न्यूज एजेंसी के मुताबिक, प्रवर्तन निदेशालय यूनिवर्सिटी परिसर को मनी लॉन्ड्रिंग रोधी कानून के तहत कुर्क करने की तैयारी कर रहा है। इसी यूनिवर्सिटी से जुड़े डॉ. उमर नबी ने सुसाइड बॉम्बर बनकर दिल्ली के लाल इलाके के बाहर ब्लास्ट को अंजाम दिया था, जिसमें 15 लोगों की मौत हुई थी। इस आतंकी हमले के बाद जांच एजेंसियों ने यूनिवर्सिटी को आतंकी मॉड्यूल का केंद्र मानते हुए जांच तेज कर दी है।

सीएम बोले-कांग्रेस ने नरेगा पर झूठ बोलने का अभियान चलाया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस ने नरेगा के नाम पर देशभर में झूठ फैलाने का अभियान चलाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने राजनीतिक लाभ के लिए योजनाओं और महापुरुषों के नाम का दुरुपयोग किया है।

मुख्यमंत्री यह बात भाजपा कार्यालय में आयोजित वीबी जी रामजी जनजागरण अभियान की प्रदेश स्तरीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए कही। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा सहित पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी और जिला टोली के सदस्य मौजूद रहे।

नरेगा के नाम पर भ्रम फैलाया- सीएम ने कहा कि ग्रामीण रोजगार के नाम पर शुरू की गई योजना को चुनाव आते ही कांग्रेस ने महात्मा गांधी से जोड़ दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि यह कांग्रेस की

पुरानी परंपरा रही है कि सत्ता और वोट के लिए महात्मा गांधी के नाम का राजनीतिक उपयोग किया जाता है।सीएम ने कहा,नरेगा को महात्मा गांधी के नाम से जोड़कर कांग्रेस ने देश में झूठ बोलने का अभियान चलाया। यह सच्चाई से कोसों दूर है और इसका जवाब जनता समय-समय पर देती रही है।

'नकली गांधी' और राम पर सवाल- मुख्यमंत्री ने कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कहा, एक तो नकली गांधी बनकर राजनीति करो और ऊपर से भगवान राम को न मानो- फिर कहते हो लोकतंत्र चले। ये कैसे चलेगा? उन्होंने कहा कि जब भगवान राम से जुड़ा मामला सुप्रीम कोर्ट में चला, तब कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने राम के अस्तित्व पर ही सवाल खड़े किए। सीएम ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को मुस्लिम पक्षकारों ने भी स्वीकार किया और भूमिपूजन में शामिल हुए, लेकिन कांग्रेस के नेता उस ऐतिहासिक क्षण से दूर रहे।

किसानों का वर्ष, गांवों पर फोकस- सीएम ने कहा कि वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है और सरकार की प्राथमिकता गांव, किसान और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है। उन्होंने कहा कि 'जय राम जी' के मंत्र के साथ यह अभियान सामाजिक एकता और विकास की दिशा में नया अध्याय लिखेगा।

जीतू पटवारी बोले- मोहन यादव फर्जी किसान पुत्र, अपना काम तो ठीक से कर नहीं पा रहे

इधर, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि, मुख्यमंत्री अपना काम ठीक से नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें आश्रम जाकर आत्मचिंतन करना चाहिए। इस तरह के बयान उनके व्यक्तित्व को गिराते हैं। पटवारी ने सीएम को फर्जी किसान पुत्र भी कहा है।उन्होंने कहा, कल मुख्यमंत्री ने 2026 किसान वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर ट्रैक्टर चलाया और गाय के पास भी गए। लेकिन ट्रैक्टर चलाने वाला हर व्यक्ति किसान नहीं होता, वह ड्राइवर भी हो सकता है। कर्ज लेकर विज्ञापनों में फोटो देना बंद करें। विज्ञापन में खुद को किसान पुत्र बताने का दावा किया जा रहा है, जबकि यह सिर्फ किसान पुत्र का विज्ञापन है। मुख्यमंत्री फर्जी किसान पुत्र हैं।

भोपाल नगर निगम भाजपा का, वहां गौमांस मिला

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि, भोपाल में नगर निगम भाजपा का है, जहां बड़ी मात्रा में गौमांस मिला। जब प्रदेश सरकार ने गौमांस पर टैक्स लगाया था, तब कांग्रेस ने आपत्ति दर्ज कराई थी। भाजपा गाय की हत्या भी करती है और उस पर शून्य प्रतिशत टैक्स भी लगाती है। गाय को लेकर जितनी मॉब लिंचिंग की राजनीति हो सकती थी, वह भाजपा ने की है।

म्यूजिक टीचर के साथ लूट, बाइक सवार ने की वारदात, हाथ नहीं लगा

वेयर हाउस से चोर ने कॉपर वायर और सामान चुराया

इंदौर। बाइक सवार बदमाश ने एक म्यूजिक टीचर का मोबाइल छीन लिया। टीचर ने दूसरी गाड़ी से आरोपी का पीछा किया, लेकिन वह हाथ नहीं लगा। पुलिस ने बदमाश के खिलाफ एफआईआर दर्ज की और तलाश की जा रही है। खजराना पुलिस ने बताया कि एरोड्रम के नितिन झार ने बताया कि वह पेशे से म्यूजिक टीचर है। रात में बायपास इलाके में एक प्रोग्राम में गया था। करीब 11 बजे वापस आते समय रेडिसन चौराहे के पास एमआर-10 के यहां रोड क्रॉस कर रहा था। मोबाइल पर बात करते समय पीछे से आए बाइक सवार ने आईफोन पर झपट्टा मारा और मोबाइल लेकर स्टार चौराहे की तरफ भाग गया। लोगों से मदद लेकर उसका पीछा भी किया, लेकिन वह हाथ नहीं आया। रात में पुलिस को घटना की जानकारी दी। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

वेयरहाउस में घुसा चोर- लसूड़िया पुलिस ने एसडी लॉजिस्टिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के वेयर हाउस मैनेजर राकेश सिंह सेंगर की शिकायत पर अज्ञात चोर पर एफआईआर की है। राकेश ने बताया कि उनकी कंपनी सोलर से संबंधी वायर, पैनल व अन्य उत्पादों का पूरे प्रदेश में डिस्पैच करने का काम करती है। वेयर हाउस पर पूरा सामान रखा था। शुक्रवार की रात में वह ताला लगाकर गए थे। दूसरे दिन शनिवार को पहुंचे तो ताला शटर का ताला टूटा था। अंदर से लाखों रुपए कीमत के कॉपर वायर व सामान गायब था। बाद में कैमरों के फुटेज में एक चोर शटर के अंदर आते दिखा। उसके अन्य साथी बाहर लोडिंग वाहन से सामान भरकर लेकर गए। पुलिस गाड़ी नंबर के आधार आरोपियों की तलाश शुरू की है।

बदमाश को चाकू लेकर घूमते पकड़ा

इंदौर। चाकू लेकर वारदात की नीयत से घुम रहे बदमाश को पलासिया पुलिस ने दबोच लिया है। आरोपी पर हत्या और हत्या के प्रयास का मामला पूर्व में दर्ज हो चुका है। पुलिस को सांवरिया पार्क क्षेत्र में संदिग्ध युवक दिखाई दिया। पुलिस ने उसे रोककर पूछताछ की तो उसने अपना नाम सत्यम पिता पूनमचंद बौरासी निवासी बड़ी ग्वालटोली बताया। चेकिंग करने पर उसके पेंट की जेब से चाकू मिला। पूछताछ में पता चला कि उसके खिलाफ थाना तुकोगंज में हत्या और हत्या के प्रयास का मामला दर्ज हो चुका है। वहीं तिलकनगर क्षेत्र में मारपीट के भी कई प्रकरण पाए गए हैं।

पुलिस की तत्परता से पर्स मिला

इंदौर। जूनी इंदौर थाना क्षेत्र में पुलिस की त्वरित कार्रवाई से युवक को खोया हुआ पर्स वापस मिल गया। टीआई अनिल गुप्ता के मुताबिक, 9 जनवरी को पंचशील नगर निवासी मनोज पिता लालचंद विध्वंश अपने परिवार के साथ सिंधी कॉलोनी से राजवाड़ा जा रहे थे। इसी बीच, वे ऑटो रिक्शा में अपना पर्स भूल गए। काफी देर बाद उन्हें पर्स खो जाने का पता चला। पर्स में मंगलसूत्र, दो चांदी की पाजेब और 15,000 नगद सहित करीब ढाई लाख का सामान रखा हुआ था। फरियादी ने तत्काल इसकी सूचना जूनी इंदौर पुलिस को दी। सूचना मिलते ही टीआई ने तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए गए। निर्देशों के तहत आरक्षक श्याम मालवीय एवं आरक्षक योगेश जाट ने क्षेत्र में लगे 60 से अधिक सीसीटीवी कैमरों का बारीकी से अवलोकन किया। इसके बाद ऑटो चालक की शीघ्र पहचान की। आटो चालक ने पुलिस को पर्स लौटा दिया। तत्पश्चात पुलिस ने फरियादी को थाने बुलाकर पर्स दिया। पर्स वापस मिलने पर फरियादी ने पुलिस को धन्यवाद दिया।

नकली पान मसाला की फैक्ट्री पकड़ी

इंदौर। रहवासी क्षेत्र में अवैध रुप से हानिकारक पदार्थ मैग्नीशियम काबोर्नेट से नकली पान मसाला बनाने वाली फैक्ट्री पर कनाड़िया पुलिस ने कार्रवाई की थी। यहां विमल कंपनी का हूबहू नकली पान मसाला तैयार कर बड़ी मात्रा में बाजार में सप्लाय किया जाता था। मामले में पुलिस ने फैक्ट्री सील कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस को यह कार्रवाई सहारा सिटी होम्स बिचौली मदार्ना बायपास पर की थी। मामले में पुलिस ने अक्षत शर्मा निवासी स्नेह नगर, जावेद कुरैशी निवासी सनावद तथा अरुण सिंह निवासी रोशन पार्क पालघर मुंबई को पकड़ा। फैक्ट्री से पाउच, पैकिंग मशीन, पाउच सिलिंग मशीन, सुपारी ओवन ड्रायर, सुपारी कटर मशीन, विमल रोल, मैग्नीशियम कार्बोनेट, कत्था, चूना, टबैको लिक्विड, थैली विमल पान मसाला (कीमत करीब 5 लाख रुपए) जब्त किया है। आरोपियों ने पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे लंबे समय से नकली पान मसाला बना रहे हैं।

श्रमिक ने लगाई फांसी, कारण अज्ञात

इंदौर। अज्ञात कारणों के चलते फैक्ट्री में काम करने वाले श्रमिक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान दीपक परसराम निवासी द्वारकापुरी के रूप में हुई है। दीपक सांवेर रोड स्थित फैक्टरी में काम करता था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्ट्म के लिए जिला अस्पताल भिजवाया है। परिजनों से प्रारंभिक पूछताछ में अब तक किसी ठोस विवाद या तनाव की बात सामने नहीं आई है। मौके से कोई सुसाइड नोट भी बरामद नहीं हुआ है। पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है और दीपक के मोबाइल कॉल रिकॉर्ड व अन्य पहलुओं की जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि प्रारंभिक जांच में यह आत्महत्या का मामला प्रतीत हो रहा है। हालांकि पति-पत्नी के बीच किसी बात को लेकर विवाद की आशंका भी जताई जा रही है।

कट मारने को लेकर मारपीट

इंदौर। वाहन से कट मारने को लेकर हुए विवाद में फरियादी के साथ आरोपी ने मारपीट कर दी। एरोड्रम पुलिस के मुताबिक विवाद लक्ष्मणपुरा में किराना दुकान के सामने हुआ। फरियादी दुर्गाप्रसाद पिता पूनमचंद सुनानिया निवासी गोमती नगर ने बताया कि मेरी बहन के घर के सामने रहने वाला आरोपी पप्पू पिता दिनेश पवार निवासी लक्ष्मणपुरा कॉलोनी अपनी गाड़ी तेज चलाकर मुझे कट मारते हुए निकला। मैंने उससे बोला कि भाई, गाड़ी देखकर चलाओ। इसी बात पर उसने मारपीट की।

सराफा की दुकानों में हिजाब, मास्क से चेहरा ढंककर आने पर रोक लगी

यह फैसला किसी समुदाय के खिलाफ नहीं, सुरक्षा कारणों से लिया

इंदौर। ज्वेलरी दुकानों में अब मास्क, हिजाब या कपड़े से चेहरा छुपाकर आने वाले ग्राहकों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। यानी गहने खरीदने वालों को अब चेहरा पूरी तरह से खुला रखना होगा। इंदौर चांदी-सोना व्यापारी एसोसिएशन ने शहर की सभी ज्वेलरी दुकानों के संचालकों से अपील की है कि मास्क, हिजाब या किसी भी तरह से चेहरा छुपाकर आने वाले ग्राहकों को गहने न दिखाए जाएं। इसके लिए एसोसिएशन के अध्यक्ष हुकुम सोनी और मंत्री बसंत सोनी ने व्यापारियों के नाम लिखित पत्र जारी किया है। कहा है कि ऐसे ग्राहकों को ही गहने खरीदने को दिखाएं, जिनके चेहरे सीसीटीवी में स्पष्ट दिखे एसोसिएशन के पदाधिकारियों का कहना है कि देश के कई शहरों में पिछले कुछ महीनों में चेहरा छुपाकर बदमाशों ने सराफा दुकानों में लूट की वारदात अंजाम दी हैं। अपराधी सीसीटीवी कैमरों से बचने के लिए मास्क या कपड़ों से चेहरा छुपाकर दुकान में घुसते हैं और वारदात के बाद फरार हो जाते हैं। इसी खतरे को देखते हुए यह कदम उठाया गया है। व्यापारियों का कहना है कि यह फैसला किसी समुदाय विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि पूरी तरह सुरक्षा कारणों से लिया गया है।

कई राज्यों में ऐसे नियम – इसी तरह का नियम बिहार में लागू किया जा चुका है। झारखंड में भी तैयारी है, जबकि उत्तर प्रदेश के वाराणसी और झांसी के सराफा बाजारों में बुर्का, मास्क वाले ग्राहकों के प्रवेश पर रोक के पोस्टर लगाए जा चुके हैं। बिहार में इस फैसले के बाद तीखा विवाद खड़ा हो गया था। मुस्लिम संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इसे धार्मिक भेदभाव बताया। बिहार राज्य अल्पसंख्यक आयोग ने इसे असंवैधानिक करार देते हुए प्रशासन से हस्तक्षेप की मांग भी की, जिसके बाद यह मामला राजनीतिक बहस का मुद्दा बन गया।

कार रेंटल कंपनी से धोखाधड़ी, पान मसाला कारोबारी पर मामला दर्ज

फर्जी दस्तावेजों से किराए पर कारें लेकर गिरवी रख दिया

इंदौर। लसूडिया पुलिस ने एक कार रेंटल कंपनी के संचालक की शिकायत पर पान मसाला कारोबारी के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। पीड़ित का आरोप है कि आरोपी ने परिचित होने का फायदा उठाकर लंबे समय तक किराए पर कारें लीं, फिर लाखों रुपए की रकम हड़प ली और कारें भी गिरवी रख दीं। लसूड़िया पुलिस के अनुसार सेक्टर-ई, स्लाइस निवासी प्रीतम कुशवाह की शिकायत पर अंजन पुत्र मोहन श्रीवास्तव, निवासी नवलखा कॉम्प्लेक्स, सपना-संगीता रोड के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। प्रीतम ने पुलिस को बताया कि उनकी बागेश्वर कार रेंटल कंपनी है और वे अंजन को पिछले करीब चार साल से जानते हैं। अंजन ने खुद को पान मसाले का निर्माता बताते हुए कहा था कि वह 'सागर गुटका' ब्रांड से कारोबार करता है और मार्केटिंग के लिए प्रदेशभर में लगातार यात्रा करनी पड़ती है। इसी के चलते वह पिछले दो साल से प्रीतम से किराए पर कारें ले रहा था। शुरुआत में दोनों के बीच तय शर्तों के अनुसार नियमित हिसाब-किताब और भुगतान होता रहा। अगस्त 2025 से अंजन ने अचानक किराया देना बंद कर दिया।

उस समय उसके पास करीब पांच कारें किराए पर थीं, जिनका भुगतान भी लंबित हो गया। जब प्रीतम ने कारें और रकम वापस मांगी तो आरोपी टालमटोल करने लगा। बाद में जीपीएस लोकेशन से पता चला कि आरोपी ने फर्जी दस्तावेज तैयार कर कारों को अलग-अलग स्थानों पर गिरवी रख दिया है। प्रीतम का आरोप है कि आरोपी अब उन्हें धमकियां भी दे रहा है और न तो कारें लौटा रहा है और न बकाया रकम चुका रहा है। शनिवार को पीड़ित ने लसूडिया थाने में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद पुलिस ने अंजन श्रीवास्तव के खिलाफ धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

शातिर बदमाश गिरफ्तार, नकबजनी की 4 वारदात में शामिल पाया गया

सवा पांच लाख रुपए का माल बरामद, मामले की जांच जारी

इंदौर। शहर में बढ़ते चोरी, नकबजनी और लूट जैसे संपत्ति संबंधी अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। इसी कड़ी में द्वारकापुरी पुलिस ने नकबजनी की वारदातों को अंजाम देने वाले दो शातिर आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों ने कई महीने पहले वारदात की थी। गिरफ्तार मुख्य आरोपी राजेन्द्र पिता प्रीतमसिंह महाराष्ट्र के जलगांव जिले के थाना चोपड़ा ग्रामीण में दर्ज हत्या के प्रयास के मामले में फरार चल रहा था। उस पर इनाम भी घोषित था। इसके अलावा वह इंदौर के थाना सदर बाजार और थाना एरोड्रम के अपराधों में भी वांछित था। पूछताछ में आरोपियों ने थाना द्वारकापुरी क्षेत्र में की गई 4 नकबजनी की वारदातों को स्वीकार किया। पुलिस ने उनके कब्जे से चोरी किया गया करीब 5 लाख 20 हजार रुपए कीमत का माल बरामद किया है। आरोपी राजेन्द्र की निशानदेही पर उसके साथी दीपक सिंह पिता कैलाश सिंह बरनाला निवासी उमहटी, थाना बरला, जिला बड़वानी को पकड़ा। आरोपियों के कब्जे से 30 हजार रुपए नकद, डेढ़ लाख रुपए के सोने की चेन और पेंडल, दो लाख 30 हजार रुपए की 5 अंगूठियां, 60 हजार रुपए के कान के टॉप्स, 10 हजार रुपए की कान की बाली, 40 हजार रुपए के चांदी के आभूषण (पायल, सिक्के, ब्रेसलेट, ज्वेलरी सेट आदि) बरामद किए हैं। आरोपियों से अन्य वारदातों को लेकर पूछताछ की जा रही है।

टाइल्स ठेकेदार की चाइनीज मांझे से गला कटने से मौत हुई, दूसरी घटना

कनाडिया-तिलक नगर लिंक रोड पर झूल रहा मांझा गर्दन में फंसा

इंदौर। चाइनीज मांझे ने एक और परिवार को उजाड़ दिया। कनाडिया और तिलक नगर क्षेत्र के बीच रविवार शाम दिल दहलाने वाला हादसा हुआ। पतंग के चाइनीज मांझे की चपेट में आने से एक बाइक सवार व्यक्ति की गर्दन कट गई। ज्यादा खून बहने से उसने दम तोड़ दिया। मृतक की पहचान 35 साल के रघुवीर धाकड़ के रूप में हुई। वह बिचौली मर्दाना स्थित ओम साईं विहार कॉलोनी में रहते थे। शहर में चाइनीज मांझा से दूसरी घटना हुई है। एक माह पहले एक युवक की बाइक से आते वक्त गला कटा था। रघुवीर पेशे से टाइल्स फिटिंग के ठेकेदार थे। परिजनों ने बताया कि रविवार को छुट्टी होने के बावजूद वे एक नई साइट देखने निकले थे। शाम करीब 5 बजे जब वे अपनी बाइक से घर लौट रहे थे, तभी कनाड़िया-तिलक नगर लिंक रोड पर हवा में झूल रहा चाइनीज मांझा उनकी गर्दन में फंस गया। मांझा इतना धारदार था कि पलक झपकते ही रघुवीर की गर्दन गहरे तक कट गई।

परिवार में दूसरा बड़ा आघात

राहगीरों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी और उनके मोबाइल से परिजनों से संपर्क किया। लेकिन, अस्पताल ले जाने से पहले ही उनकी मौत हो गई।

रघुवीर की मौत की खबर सुनते ही परिवार में कोहराम मच गया। इस परिवार के लिए दूसरा बड़ा आघात है। रघुवीर के दो बेटे थे, जिनमें से एक बेटे की दो साल पहले पानी में डूबने से मौत हो गई थी। अब रघुवीर की मौत के बाद घर में केवल उनकी पत्नी और एक बेटा साहिल बचा है।

प्रशासन की सख्ती पर नाकाफी

जिला प्रशासन ने धारा 144 के तहत चाइनीज मांझे की बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगा रखा है। इसके बावजूद शहर के कई इलाकों में चोरी-छिपे यह जानलेवा मांझा बेचा जा रहा है। रघुवीर की मौत ने एक बार फिर पुलिस और प्रशासन की मुस्तैदी पर सवाल खड़े कर दिए हैं। इससे पहले उज्जैन में गला कटने से छात्रा की मौत हो चुकी है। 15 जनवरी 2022 को जीरो पाइंट पुल से दोपहिया वाहन से गुजर रही 11वीं कक्षा की छात्रा नेहा आंजना की चाइना डोर से गला कटने से जान चली गई थी।

जिला बदर जैसी कार्रवाई भी की

पुलिस के मुताबिक 7 दिनों में 15 लाख रुपए से ज्यादा का मांजा जब्त किया है और चाइनीज मांजा बेचने वालों पर जिला बदर जैसी कार्रवाई भी की है। इसके बावजूद खजराना, छत्रीपुरा, कनाड़िया, एरोड्रम, मल्हारगंज और एमजी रोड इलाकों में चाइनीज मांजा चोरी-छिपे बिकने की बात सामने आ रही है। तीसरी घटना एरोड्रम थाना इलाके में एयरपोर्ट के सामने की है। यहां आशीष रघुवंशी निवासी स्कीम नंबर 51 का भी बाइक पर जाते समय चाइना मांझे से गला कट गया। उसे उपचार के लिए 60 फीट रोड के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पुलिस की चेकिंग में 209 बदमाशों पर कार्रवाई, फरार गिरफ्त में आए

शराब पीकर वाहन चलाने वाले 153 के खिलाफ भी कार्रवाई

इंदौर। बढ़ती आपराधिक घटनाओं पर लगाम लगाने पुलिस द्वारा लगातार प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में 10-11 जनवरी को सम्पूर्ण शहर में विशेष चेकिंग और गश्त अभियान चलाया गया। रात 11 बजे से 2 बजे तक थाना प्रभारियों के नेतृत्व में गुंडे, बदमाशों और असामाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखी।

इस दौरान कई संदिग्धों और बदमाशों की जांच के बाद 209 के खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की गई। पुलिस ने विभिन्न मामलों में लंबे समय से फरार 56 गैर-जमानती वारंटों की तामील कराई, जिनमें 12 स्थायी वारंट और 44 गिरफ्तारी वारंट शामिल हैं। इससे कई फरार अपराधी पुलिस की गिरफ्त में आए हैं। शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई करते हुए 153 लापरवाह वाहन चालकों पर मोटर व्हीकल एक्ट की धारा 185 के तहत कार्रवाई की गई। इनमें 82 दोपहिया और 71 चार पहिया वाहन चालक शामिल हैं।

पुलिस ने स्पष्ट किया है कि ऐसी कार्रवाई आगे भी लगातार जारी रहेगी। इसके साथ ही

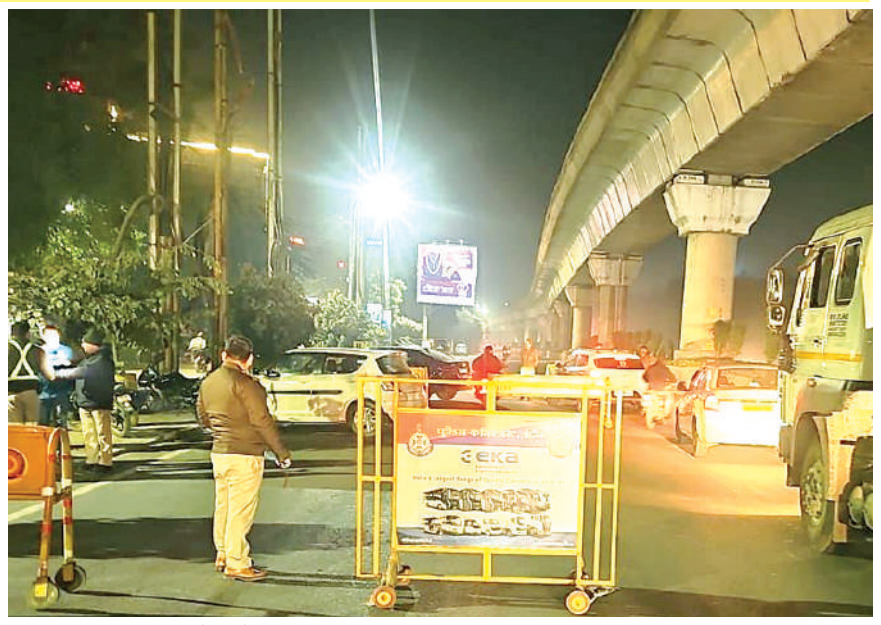

हॉटस्पॉट, मल्टियों और शैडो एरिया में ड्रोन पेट्रोलिंग के जरिए निगरानी की गई। चाकूबाजों, ड्रग पैडलरों, जिलाबदर बदमाशों और आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को चेक कर उनके खिलाफ कार्रवाई की गई और भविष्य में अपराध न करने की सख्त हिदायत दी गई।

बदमाशों ने तीन माह पहले झपटी थी महिला की चेन, दो गिरफ्तार

दिनदहाड़े किया था वारदात को अंजाम, पूछताछ जारी

इंदौर। तीन माह पहले शाम के समय घर के बाहर टहल रही महिला की चेन बाइक सवार दो बदमाश झपटकर भाग निकले थे। मामले में महिला की शिकायत पर तिलक नगर पुलिस ने अज्ञात बदमाशों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया था। आरोपियों को पकड़ने पुलिस ने घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज खंगाले, मुखबीर तंत्र को सक्रिय किया। टीम गठित कर कई स्थानों पर दबिश दी। अंततः मशक्कत के बाद झपटमारी करने वाले दो बदमाश पुलिस के हत्थे चढ़ गए। फरियादी अंकिता असावा निवासी शर्मा एनक्लेव गिरधर नगर ने 13 नवंबर को शिकायत दर्ज कराई थी कि वह शाम करीब 5 बजे घर के बाहर टहल रही थी। तभी बदमाशों ने वारदात को अंजाम दिया। मामले में पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 304(2) का केस दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। लगातार प्रयास करने के बाद पुलिस ने स्कीम नंबर 140 से ऋषभ सोनकर निवासी विनोबा नगर थाना पलासिया और रोहित वर्मा निवासी रविन्द्र नगर थाना पलासिया को पकड़ा। पूछताछ में आरोपियों ने वारदात करना कबूला। दोनों आरोपियों के खिलाफ पहले से लूट, चोरी, मारपीट और आबकारी एक्ट से जुड़े कई मामले दर्ज हैं। आरोपियों से अन्य वारदातों को लेकर पूछताछ की जा रही है।

खुले कुएँ में गिरे तेंदुए का सफल रेस्क्यू, वन विभाग की व्यवस्था पर भरोसा बढ़ा

रेस्क्यू टीम की तत्परता से बची तेंदुए की जान, स्वास्थ्य परीक्षण किया

इंदौर। रविवार दोपहर करीब 12:30 बजे ग्राम पंचायत जामनिया खुर्द स्थित क्रिसेंट वाटर पार्क के पास एक खुले कुएं में तेंदुआ गिर गया। सूचना मिलते ही रालामंडल रीजनल रेस्क्यू टीम अलर्ट हो गई और तेंदुए को सुरक्षित निकाल लिया गया। निर्धारित मानक प्रोटोकॉल का पालन करते हुए टीम तत्काल मौके पर पहुंची और घंटों की सावधानी पूर्ण मशक्कत के बाद तेंदुए को बाहर निकाला। रेस्क्यू के बाद तेंदुए को प्राथमिक चिकित्सा परीक्षण के लिए इंदौर चिड़ियाघर लाया गया, जहां विशेषज्ञ डॉक्टरों की निगरानी में उसका स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। प्रारंभिक जांच में तेंदुए की उम्र करीब 2 से 3 वर्ष बताई गई।

337 वन्यजीवों का सफल रेस्क्यू

वन मंडल अधिकारी (डीएफओ) प्रदीप मिश्रा ने बताया कि यह

घटना केवल एक वन्यजीव के रेस्क्यू तक सीमित नहीं है,बल्कि इंदौर में मानव-वन्यजीव संघर्ष प्रबंधन की सशक्त व्यवस्था का प्रमाण है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2021 से 2025 के बीच इंदौर वन मंडल में कुल 337 वन्यजीवों का सफल रेस्क्यू किया गया, जिनमें 66 तेंदुए शामिल हैं। बढ़ती रेस्क्यू संख्या संघर्ष का संकेत नहीं, बल्कि बेहतर रिपोर्टिंग, त्वरित प्रतिक्रिया और आमजन के बढ़ते विश्वास को दर्शाती है।

रेस्क्यू प्रणाली सुरक्षा के उपाय

वन विभाग द्वारा थर्मल ड्रोन, कैमरा ट्रैप और प्रशिक्षित रेस्क्यू टीमों की मदद से संवेदनशील अभियानों को सुरक्षित अंजाम दिया जा रहा है। साथ ही खुले कुओं जैसे मानव-निर्मित खतरों को ढकने और ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। डीएफओ मिश्रा के अनुसार, मजबूत रेस्क्यू प्रणाली ही मानव और वन्यजीवों के सुरक्षित सह अस्तित्व की कुंजी है, और इंदौर इस दिशा में एक सफल उदाहरण बनकर उभरा है।

संपादकीय

कृषक कल्याण वर्ष: किसान समृद्धि की दिशा

मध्य प्रदेश सरकार ने 2026 को 'कृषक कल्याण वर्ष' घोषित कर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने भोपाल के जंबूरी मैदान में इसका औपचारिक ऐलान किया। यह घोषणा न केवल राज्य के लाखों किसानों के लिए उत्साहजनक है, बल्कि कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दृढ़ प्रतिबद्धता का प्रतीक भी है। पूरे वर्ष 16 विभाग मिलकर किसानों के कल्याण से जुड़ी गतिविधियां संचालित करेंगे, जो खेती को लाभकारी व्यवसाय बनाने और आय दोगुनी करने पर केंद्रित होंगी। यह प्रयास मध्य प्रदेश को कृषि नवाचार का केंद्र बनाने की दिशा में एक रणनीतिक पहल है। मध्य प्रदेश, जो कृषि प्रधान राज्य है, पहले ही अपनी उपलब्धियों से देश को प्रभावित कर चुका है। मुख्यमंत्री ने उल्लेख किया कि राज्य एकमात्र ऐसा है जहां खेती का रकबा ढाई लाख हेक्टेयर बढ़ गया है। यह वृद्धि वर्षों के सतत प्रयासों का परिणाम है, जिसमें सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, बीज सुधार और बाजार सुधार शामिल हैं। अब 'कृषक कल्याण वर्ष' के तहत अनुसंधान, इनोवेशन और युवाओं को कृषि से जोड़ने पर जोर दिया जाएगा। कृषि पर्यटन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे, जबकि डेयरी, पशुपालन, मत्स्य पालन और फूड प्रोसेसिंग को बढ़ावा मिलेगा। फल, सब्जी, मसाला व औषधीय फसलों का उत्पादन मजबूत होगा, जो किसानों की विविधीकरण की क्षमता बढ़ाएगा। इस पहल की ताकत 16 विभागों का समन्वित कार्य है। कृषि से जुड़े उद्योगों को सब्सिडी, स्टार्टअप को प्रोत्साहन और मेगा फूड पार्क तथा एग्री प्रोसेसिंग क्लस्टर्स का विकास होगा। कृषि अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पादन के लिए कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट स्थापित किए जाएंगे, जो पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देंगे। 'एमपी ग्लोबल एग्री ब्रांडिंग' और 'एग्री-हैकाथॉन' जैसी नवाचारी गतिविधियां राज्य के उत्पादों को वैश्विक बाजार से जोड़ेंगी। तीन नए रिसर्च सेंटर डिंडोरी में श्रीअन्न (मिलेट्स), ग्वालियर में सरसों और उज्जैन में चना कृषि अनुसंधान को नई गति देंगे। साथ ही, नर्मदापुरम में आम महोत्सव, नरसिंहपुर में गन्ना महोत्सव और अक्टूबर-नवंबर में फूड फेस्टिवल आयोजित होंगे, जो स्थानीय उत्पादों को ब्रांडिंग देंगे। हालांकि, यह घोषणा सराहनीय है, लेकिन चुनौतियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मध्य प्रदेश के किसान अभी भी जलवायु परिवर्तन, कर्ज के बोझ और बाजार अस्थिरता से जूझ रहे हैं। पिछले वर्षों में सूखा और बाढ़ ने फसलों को नुकसान पहुंचाया। जबकि, एमएसपी की सीमित पहुंच ने आय को प्रभावित किया। 'कृषक कल्याण वर्ष' को सफल बनाने के लिए इन मुद्दों पर ठोस कार्रवाई जरूरी है। युवाओं को कृषि से जोड़ने के नाम पर केवल प्रचार न हो, बल्कि कौशल प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता सुनिश्चित हो। लॉजिस्टिक अधोसंरचना मजबूत हो तो ही किसान उत्पादों को उचित मूल्य पर बेच सकेंगे। इसके अलावा, महिलाओं और छोटे किसानों को प्राथमिकता देकर समावेशी विकास सुनिश्चित किया जाए।केंद्र सरकार की 'डबलिंग फार्मर्स इनकम' योजना से प्रेरित यह पहल मध्य प्रदेश को कृषि निर्यात का हब बना सकती है। लेकिन, सफलता का पैमाना केवल घोषणाएं नहीं, बल्कि जमीन पर परिणाम होंगे। यदि 16 विभाग समन्वय से काम करेंगे, तो 2026 किसानों के लिए वास्तविक कल्याण वर्ष सिद्ध होगा। राज्य सरकार को पारदर्शी मॉनिटरिंग तंत्र स्थापित करना चाहिए, ताकि गतिविधियों का प्रभाव मापा जा सके। निजी क्षेत्र और एनजीओ की भागीदारी से यह अभियान और मजबूत होगा। अंततः, 'कृषक कल्याण वर्ष' मध्य प्रदेश के ग्रामीण परिदृश्य को बदलने का सुनहरा अवसर है। यदि इसे सही दिशा मिली, तो न केवल किसानों की आय बढ़ेगी, बल्कि राज्य की जीडीपी में कृषि का योगदान भी उछलेगा। यह किसानों को सशक्त बनाकर भारत की खाद्य सुरक्षा को मजबूत करेगा। सरकार, किसान संगठनों और समाज को मिलकर इस संकल्प को साकार करना होगा।

जी रामजी के विरोध के मायने

नजरिया

अवधेश कुमार
लेखक दिल्ली निवासी पत्रकार हैं।

कांग्रेस पार्टी ने इसके विरुद्ध देशव्यापी विरोध अभियान की घोषणा की है। कई अन्य दल भी इसके विरुद्ध मोर्चाबंदी कर रहे हैं। इस तरह अब राज्यों में मनरेगा की जगह जी राम जी के अंतर्गत योजनाएं चलेंगीं तो दूसरी ओर विपक्षी पार्टियों का विरोध और इसके समानांतर भाजपा के द्वारा इसके समर्थन का अभियान चलेगा। सामान्य तौर पर यह स्वीकार किया जा सकता है कि कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में 2005 में नेशनल रूरल एंप्लॉयमेंट गारंटी एक्ट या नरेगा कानून लागू किया था तो उसका इससे लगाव होगा।

भाजपा की राज्य सरकारें या प्रदेश इकाइयां हर जगह जी राम जी पर पत्रकार वार्तायें आयोजित कर रही हैं तथा पार्टी के स्तर पर इसे अभियान के रूप में लिया गया है। सरकारी कार्यक्रमों में ऐसा सामान्यतया कम होता है। विपक्ष के जबरदस्त विरोध के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार ने दृढ़ता के साथ संसद में पारित कराकर संदेश दे दिया था कि इसे हर हाल में क्रियान्वित किया जाएगा। कांग्रेस पार्टी ने इसके विरुद्ध देशव्यापी विरोध अभियान की घोषणा की है। कई अन्य दल भी इसके विरुद्ध मोर्चाबंदी कर रहे हैं। इस तरह अब राज्यों में मनरेगा की जगह जी राम जी के अंतर्गत योजनाएं चलेंगीं तो दूसरी ओर विपक्षी पार्टियों का विरोध और इसके समानांतर भाजपा के द्वारा इसके समर्थन का अभियान चलेगा। सामान्य तौर पर यह स्वीकार किया जा सकता है कि कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में 2005 में नेशनल रूरल एंप्लॉयमेंट गारंटी एक्ट या नरेगा कानून लागू किया था तो उसका इससे लगाव होगा। किंतु कोई कार्यक्रम बंद नहीं हो और उसकी जगह दूसरा आरंभ न हो सके ऐसी परंपरा न पहले थी न आगे स्थापित हो सकती है। देश, काल और परिस्थिति के अनुसार ऐसी योजनाएं और कार्यक्रम बनते हैं तथा उनमें परिवर्तन आने के साथ योजनाएं संशोधित होतीं हैं, कुछ बंद होती हैं और कुछ बिल्कुल नयी आरंभ भी होतीं हैं। विपक्ष इस कार्यक्रम से महात्मा गांधी नाम हटाने को आधार बनाकर विरोध को एक वैचारिक स्वरूप भी देने की कोशिश कर रहा है। हालांकि यूपीए सरकार ने भी महात्मा गांधी का नाम सन् 2009 में जोड़ा था। कहा जा सकता है कि यूपीए सरकार की महात्मा गांधी के नाम पर अलग सेविशेष कार्यक्रम आरंभ करने की सोच नहीं थी इसलिए जारी योजना में नाम जोड़ा गया। विपक्ष की ओर उंगली उठती है कि क्या उनका जी राम जी नाम से विरोध है? क्या कांग्रेस पार्टी और उन विपक्षी दलों को लगता है कि प्रभु राम नाम से सरकारी कार्यक्रमों का सेक्युलर चरित्र समाप्त होता है? कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से लेकर उनके पुत्र और कांग्रेस के साथी तमिलनाडु के द्रमुक आदि की सनातन और हिंदुत्व के प्रति विचार और व्यवहार से हम परिचित हैं। इसलिए यह भी जी राम जी के साथ महत्वपूर्ण विचारणीय पहलू हो जाता है।

वर्तमान कार्यक्रम मनरेगा है ही नहीं। मनरेगा समाप्त कर जी राम जी नया कानून बना है। इसलिए यह आलोचना गलत है कि महात्मा गांधी का नाम हटाकर जी राम जी कर दिया गया है। नरेगा और मनरेगा को बंद करने या इसमें बदलाव की मांग पुरानी है। इस कार्यक्रम ने कागजी खानापूर्ति और भ्रष्टाचार के ऐसे कृतिमान बनाये जिनको रोक पाना मनरेगा ढांचे में संभव नहीं हो पाया। केंद्र से राज्यों की कैग और अन्य रिपोर्ट, स्वतंत्र एनजीओ के अध्ययन तथा जमीन स्तर पर साफ दिख रहा था कि मनरेगा के नाम पर ज्यादातर खानापूर्ति हो रही है। जी राम जी में बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण, डिजिटल मॉनिटरिंग, सशक्त सोशल ऑडिट साप्ताहिक पब्लिक डिस्क्लोजर आदि के प्रावधान से भ्रष्टाचार की संभावनाएं क्षीण होती हैं। किसी कार्यक्रम को बंद करना उस महान व्यक्ति के प्रति धारणा का द्योतक नहीं हो सकता। यह सामान्य समझ की बात है कि 2005 की जिन परिस्थितियों और पृष्ठभूमि में नरेगा आरंभ हुआ उनमें और आज में अनेक मायनों में बदलाव आ गए हैं। दो दशक पहले नरेगा आरंभ होते समय की ग्रामीण और समस्त भारत की आर्थिक स्थिति में व्यापक अंतर आ चुका है। 2011-12 में 25.7 प्रतिशत के आसपास गरीब आबादी थी जबकि 2023 24 में यह 4.86 प्रतिशत रह गई है। तब और आज के गांवों की स्थिति वैसी ही नहीं है। गांव की डिजिटल पहुंच बढ़ी है, बिजली आपूर्ति काफी हद तक सुनिश्चित है, यातायात संपर्क की सुविधा बेहतर हुई है और सामाजिक सुरक्षा आज ज्यादा सशक्त है। भारत 2047 तक विकसित देश का लक्ष्य बनाकर चल रहा है तो गांव और शहर से जुड़े सारे कार्यक्रम उस लक्ष्य के अनुरूप होने चाहिए।

इसमें केवल 100 की जगह 125 दिनों के रोजगार की ही बात नहीं है। हालांकि यह भी महत्वपूर्ण है। इसके साथ ग्रामीण क्षेत्र को ऐसे सशक्त और टिकाऊ आधारभूत ढांचा देना है जिनसे वे सक्षमता की ओर बढ़ें। इसमें बने निर्मित सभी परिसंपत्तियों को विकसित भारत राष्ट्रीय ग्रामीण आधारभूत संरचना स्ट्रेट में शामिल किया जाएगा। इससे ग्रामीण विकास से जुड़े सारे काम एक ही व्यवस्था से जुड़ेंगे। जी राम जी में चार मुख्य काम निर्धारित कर दिए गए हैं। जल से संबंधित कार्यों के माध्यम से जल सुरक्षा, मुख्य ग्रामीण आधारभूत संरचना, आजीविका से संबंधित संरचना और मौसमी घटनाओं के प्रभाव को प्रभाव को कम करने वाले विशेष कार्य। बाढ़ और सुखार के प्रभावों को कम करने और निपटने के ढांचे शामिल है। जीरामजी का स्वरुप और संस्कार मनरेगा से अलग है। तब काम अलग-अलग श्रेणियों में फैले हुए थे। यहां रोजगार पर फोकस होते हुए भी गांव के लिए स्थिर उत्पादक क्षमता पैदा करने और बढ़ाने यानी आत्मनिर्भरता का भाव है। मनरेगा या पहले के ग्रामीण रोजगार योजनाओं का फोकस ऐसा नहीं था। इसमें ग्राम पंचायत द्वारा निर्मित विकसित ग्राम पंचायत योजना को अनिवार्य किया गया है। इन योजनाओं को प्रधानमंत्री गति शक्ति जैसे राष्ट्रीय प्रणालियों से भी संबद्ध किया जाएगा।

मिशन अमृत सरोवर के तहत 68,000 से ज्यादा जल निकाय बने या पुनर्जीवित हुए हैं । इससे खेती और भूजल की स्थिति में परिवर्तन आया है। इसे और शक्ति मिलेगी। जल संचयन, बाढ़ निकासी और मृदा संरक्षण आदि काम होंगे तो गांव की आजीविका सुरक्षित होगी। सड़कों और संपर्क सुविधाओं के साथ भंडारण, बाजार और उत्पादन से जुड़ी सुविधाएं बढ़ेंगी तो किसानों के लिए आय के साधन पैदा होंगे। अगर स्थायी टिकाऊ निर्माण हुए और उनसे रोजगार के अवसर बढ़े तो पलायन में कमी आएगी।

जी राम जी के व्यय की 40त्त जिम्मेवारी राज्यों पर डालने का विरोध हो रहा है। जिन राज्यों की वित्तीय स्थिति ठीक नहीं है वहां के लिए विचार करना चाहिए। वैसे भारतीय स्टेट बैंक ने एक रिपोर्ट में इस आलोचना को निराधार बताते हुए कहा है कि राज्य इसमें नेट गेनर होंगे। केंद्र सरकार द्वारा राजस्व साझा करने की प्रणाली में राज्यों को 17,000 करोड रुपए का अतिरिक्त आवंटन होगा। आवंटन के आधार पर आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु को थोड़ा नुकसान दिख रहा है जबकि शेष राज्यों में ज्यादा आवंटन का आंकड़ा सामने आता है। राज्यों को भी अपनी वित्तीय स्थिति सशक्त करने की नीतियां अपनानी पड़ेगी। फ्रीबीज यानी मुफ्तखोरी की योजनाओं की जगह ऐसी योजना से लोगों का ज्यादा भला होगा। मुख्य बात है इस व्यवहारिक तथा गांव को आत्मनिर्भरता की दिशा में ले जाने वाले कार्यों का कल्पना के अनुरूप क्रियान्वयन। यह जिम्मेवारी अंततः राज्यों , स्थानीय प्रशासन, पंचायत तथा सामाजिक - सांस्कृतिक - धार्मिक संगठनों के साथ राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं पर आती है। इस कार्यक्रम में गांव के लोगों की रुचि बढ़ेगी क्योंकि मनरेगा सीमांत और सामान्य मध्यम किसानों के लिए अनर्थकारी बनकर सामने आया था। मुख्य कृषि कार्य के समय कृषि श्रमिकों की उपलब्धता अत्यंत कम हो गई थी। इस कारण बड़ी संख्या में लोगों ने मूल अनाज उत्पादन वाली खेती छोड़ दी। बुवाई से कटाई तक किसानों के लिए कष्टकर स्थिति रही है। मनरेगा का नाम सुनकर अनेक किसान रोने लगते थे या गुस्से में आ जाते थे। जहां मशीनों की आवश्यकता नहीं थी वहां भी उनके उपयोग की विवशता पैदा हो गई। बुवाई, कटाई, निकायी आदि के लिए मशीन खरीदना सबके वश की बात भी नहीं थी। अब काम से कम रबी और खरीफ के मुख्य मौसम में 60 दिनों तक राज्य मनरेगा को स्थगित कर सकते हैं। इससे खेती के लिए श्रमिकों की उपलब्धता की संभावना बढ़ेगी। हालांकि मनरेगा ने पूरी व्यवस्था में जैसा उथल-पुथल मचाया उसमें कृषि को पुर्नस्थापित करना आसान नहीं है फिर भी इसका सकारात्मक असर होगा।

कोई भी योजना शाश्वत नहीं हो सकती। अनुभव के आधार पर उनमें संशोधन, परिवर्तन होना चाहिए और जी राम जी भी इसका अपवाद नहीं हो सकता। भविष्य में परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन या संशोधन की स्थिति उत्पन्न होती है तो होगी। किंतु अगर कुछ नेताओं, एक्टिविस्टों आदि को जी रामजी नाम रखने से समस्या है तो इसका उपचार नहीं। सभी देवी-देवता केवल मनुष्य से परे शक्ति संपन्नता के ही नहीं सात्विकता, नैतिकता ,समाज के लिए आत्मोत्सर्ग तथा सर्व कल्याणकारी चरित्र वाले हैं। उनके नाम से सरकारी कार्यक्रमों का सेक्यूलर चरित्र प्रभावित नहीं होता। इसमें आध्यात्मिकता एवं आम लोगों के लिए योजना की पवित्रता बनाए रखने की जो भावना पैदा हो सकती है उससे व्यापक सेक्यूलर भाव क्या हो सकता है?

जंक फूड विज्ञापन पर नियंत्रण की जरूरत

सेहत

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
लेखक स्तंभकार हैं।

बच्चों के आहार में जंक फूड की बढ़ती हिस्सेदारी आज पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता बन चुकी है, और भारत भी इससे अछूता नहीं है। चीनी, नमक और अस्वस्थ वसा से भरपूर अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ अब बच्चों और किशोरों के दैनिक खान-पान का अभिन्न हिस्सा बनते जा रहे हैं। आक्रामक विज्ञापन रणनीतियाँ, चमकदार और आकर्षक पैकेजिंग, फिल्मी सितारों और खेल जगत की हस्तियों का समर्थन तथा इन उत्पादों की आसान उपलब्धता ने जंक फूड को पारंपरिक, पोषक और संतुलित भोजन की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक बना दिया है। ऐसे परिदृश्य में ब्रिटेन द्वारा जंक फूड के विज्ञापनों पर लगाए गए प्रतिबंध भारत के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जिनसे वह अपनी नियामक नीतियाँ बनाते समय सीख ले सकता है।

ब्रिटेन में सरकार ने वसा, चीनी और नमक की अधिक मात्रा वाले खाद्य पदार्थों के विज्ञापनों पर विशेष रूप से उन समयों में सख्त प्रतिबंध लगाए हैं, जब बच्चों के टेलीविजन देखने या ऑनलाइन सामग्री देखने की संभावना अधिक होती है। इस नीति का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है- बच्चों को ऐसे प्रभावशाली और लुभावने विज्ञापनों से दूर रखना, जो अस्वस्थ खान-पान की आदतों को बढ़ावा देते हैं और मोटापा, मधुमेह तथा अन्य जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों को जन्म देते हैं। यह कदम इस व्यापक समझ को दर्शाता है कि बच्चे विज्ञापनों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं और उनमें यह बौद्धिक क्षमता पूरी तरह विकसित नहीं होती कि वे व्यावसायिक संदेशों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकें।

भारत भी इसी तरह की, बल्कि कई मायनों में अधिक जटिल चुनौती का सामना कर रहा है। तेज़ी से हो रहा शहरीकरण, बदलती जीवनशैली और स्क्रीन के सामने बढ़ता समय भारतीय बच्चों को पहले की तुलना में कहीं अधिक पैकेज्ड और फास्ट फूड की ओर आकर्षित कर रहा है। विभिन्न स्वास्थ्य सर्वेक्षणों के अनुसार, पिछले दो दशकों में शहरी भारत में बाल मोटापे की दर में तेज़ वृद्धि हुई है। इसके साथ ही कम उम्र में ही मधुमेह, उच्च रक्तचाप और पोषण संबंधी कमियाँ देखने को मिल रही हैं। एक ओर जहाँ देश के कई हिस्सों में अब भी कुपोषण एक बड़ी समस्या है, वहीं दूसरी ओर अति-पोषण और अस्वस्थ आहार एक समानांतर संकट के रूप में उभर रहे हैं, जिससे भारत 'दोहरी कुपोषण समस्या' का सामना कर रहा है।

बच्चों में जंक फूड के बढ़ते उपभोग के पीछे विज्ञापन एक अत्यंत प्रभावशाली कारक है। खाद्य और पेय कंपनियाँ बच्चों को लक्षित करने के लिए विपणन अभियानों पर भारी धनराशि खर्च करती हैं। कार्टून पात्र, मुफ्त खिलौने, आकर्षक जिंगल और लोकप्रिय खिलाड़ियों व फिल्मी सितारों के समर्थन से ये उत्पाद बच्चों को मज़ेदार, आधुनिक और हानिरहित प्रतीत होते हैं। पोषण संबंधी जानकारी यदि दी भी जाती है, तो वह अक्सर जटिल, अधूरी या भ्रमित करने वाली होती है, जिससे अत्यधिक सेवन से जुड़े स्वास्थ्य जोखिम छिपे रह जाते हैं। परिणामस्वरूप बच्चे न केवल इन उत्पादों की माँग करते हैं, बल्कि उनकी स्वाद वरीयताएँ भी ऐसी बन जाती हैं जो आगे चलकर उनके पूरे जीवन के खान-पान को प्रभावित करती हैं।

ब्रिटेन की नीति यह स्वीकार करती है कि ऐसे माहौल में केवल माता-पिता की जिम्मेदारी या व्यक्तिगत चयन पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। जब बच्चे लगातार टेलीविजन, सोशल मीडिया, गेमिंग प्लेटफॉर्म और मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से प्रभावशाली विज्ञापनों के संपर्क में रहते हैं, तो स्वस्थ और अस्वस्थ विकल्पों के बीच संतुलन स्वतः ही बिगड़ जाता है। जंक फूड के विज्ञापनों के समय और स्थान को सीमित करके राज्य एक ऐसा स्वस्थ सूचना वातावरण बनाने का प्रयास करता है, जहाँ पोषक विकल्पों की आवाज़ व्यावसायिक शोर में दब न जाए।

भारत में खाद्य विज्ञापन के नियमन के लिए कुछ दिशा-निर्देश अवश्य मौजूद हैं, लेकिन वे बिखरे हुए हैं और उनका क्रियान्वयन कमजोर है। नियामक संस्थाओं द्वारा जारी नियमों में अक्सर कानूनी कठोरता का अभाव होता है और उल्लंघन करने पर शायद ही कभी कोई प्रभावी दंड दिया जाता है। इसके अतिरिक्त डिजिटल विज्ञापन एक नया और जटिल क्षेत्र बनकर उभरा है, जिस पर निगरानी रखना बेहद कठिन है। आज के बच्चे स्मार्टफोन और टैबलेट पर सामग्री देखते हैं, जहाँ लक्षित विज्ञापन पारंपरिक प्रसारण नियमों को आसानी से दरकिनार कर देते हैं। यह स्थिति एक व्यापक, आधुनिक और सशक्त नियामक ढाँचे की आवश्यकता को और अधिक गंभीर बना देती है।

यदि भारत ब्रिटेन जैसे कदम अपनाता है, तो इससे अनेक सकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं। बच्चों के देखने के समय में जंक फूड के विज्ञापनों पर रोक, अस्वस्थ खाद्य पदार्थों के प्रचार में कार्टून पात्रों और सेलिब्रिटीज़ के उपयोग पर प्रतिबंध, तथा पैकेट के सामने स्पष्ट और समझने योग्य पोषण लेबलिंग, ये सभी उपाय मिलकर जंक फूड के आकर्षण को कम कर सकते हैं। यद्यपि ऐसी नीतियाँ रातोंरात खाने की आदतों को नहीं बदलेंगी, लेकिन समय के साथ बच्चों और समाज में भोजन को लेकर सोच और अपेक्षाओं को अवश्य बदल सकती हैं।

हालाँकि यह भी सत्य है कि केवल नियमन से समस्या का पूर्ण समाधान संभव नहीं है। विज्ञापन प्रतिबंधों के आलोचक अक्सर यह तर्क देते हैं कि ऐसे कदम व्यावसायिक स्वतंत्रता का हनन करते हैं और उद्योगों पर अनावश्यक बोझ डालते हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ खाद्य प्रसंस्करण उद्योग रोजगार और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, इन चिंताओं को पूरी तरह नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। फिर भी, जब सवाल पूरी पीढ़ी के दीर्घकालिक स्वास्थ्य और भविष्य का हो, तो सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना अनिवार्य हो जाता है। ब्रिटेन का अनुभव दर्शाता है कि चरणबद्ध कार्यान्वयन और स्पष्ट, पारदर्शी दिशानिर्देशों के माध्यम से आर्थिक हितों और स्वास्थ्य उद्देश्यों के बीच संतुलन बनाया जा सकता है।

नियमन के साथ-साथ शिक्षा और जागरूकता भी उतनी ही आवश्यक हैं। बच्चों को बचपन से ही पोषण के मूल सिद्धांतों की जानकारी देना और विज्ञापनों को आलोचनात्मक दृष्टि से समझने की क्षमता विकसित करना बेहद ज़रूरी है। विद्यालय इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, यदि वे अपने पाठ्यक्रम में खाद्य साक्षरता को शामिल करें और स्कूल कैंटीन में स्वस्थ, सस्ते और पौष्टिक विकल्प उपलब्ध कराएँ। माता-पिता को भी सार्वजनिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से सहयोग की आवश्यकता है, ताकि वे जंक फूड के अत्यधिक सेवन से जुड़े जोखिमों को समझ सकें और संतुलित आहार को अपनाने के व्यावहारिक तरीके सीख सकें।

जंक फूड विज्ञापन पर होने वाली बहस केवल भोजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस समाज की तस्वीर पेश करती है, जिसे हम बनाना चाहते हैं। बच्चों के लिए अस्वस्थ उत्पादों के अनियंत्रित प्रचार की अनुमति देना वास्तव में अल्पकालिक मुनाफ़े को दीर्घकालिक स्वास्थ्य पर प्राथमिकता देना है। ब्रिटेन की पहल बच्चों के इस अधिकार को मान्यता देती है कि उन्हें जीवन की स्वस्थ शुरुआत मिले, जो चालाक और मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने वाले व्यावसायिक संदेशों से मुक्त हो। भारत जैसे देश के लिए, जहाँ जनसांख्यिकीय दृष्टि से बच्चे और युवा सबसे बड़ी पूँजी हैं, यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है।

भारत आज उसी चौराहे पर खड़ा है, जहाँ से ब्रिटेन ने अपनी दिशा तय करनी शुरू की है। बाल मोटापे और आहार से जुड़ी बीमारियों की बढ़ती लहर तत्काल और निर्णायक कदमों की माँग करती है। ब्रिटेन के नियामक ढाँचे से सीख लेकर और उसे भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप ढालकर, भारत बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा सकता है। जंक फूड विज्ञापनों का सख्त नियमन, शिक्षा और जागरूकता के प्रयास, तथा स्वस्थ विकल्पों को समर्थन, ये सभी मिलकर ऐसा वातावरण बना सकते हैं, जहाँ बच्चे लुभावने विज्ञापनों से नहीं, बल्कि सही जानकारी और स्वस्थ विकल्पों से प्रेरित होकर अपने भोजन का चयन करें। सार्वजनिक स्वास्थ्य में किया गया यह निवेश न केवल स्वास्थ्य व्यय को कम करेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के समग्र कल्याण और उत्पादकता को भी सुदृढ़ बनाएगा।

माधव गाडगिल को हम अलविदा नहीं कह सकते

स्मृति

श्याम बोहरे
लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

मैं होशंगाबाद में अपने कार्यालय में बैठा था। एक सज्जन आए और परिचय दिया, मैं माधव गाडगिल दिल्ली से आया हूं। आपके मित्र ने भेजा है। मुझे यहां तवा नदी पर बने बांध क्षेत्र का अध्यन करना है। आपका सहयोग जरुरी है। चूंकि मित्र ने भेजा था इसलिये मैंने कहा, जरुर।

चाय पीने के बाद हम दोनों साइकिल से चल पड़े पास के गांव में। दो दिनों तक चार-पांच गांव घूमने के बाद तीसरे दिन कलेक्टर से मिलने गए। माधव गाडगिल ने बताया कि श्याम जी के सहयोग से गांवों से अच्छी जानकारी मिल गई। कलेक्टर ने जानना चाहा कि सर्किट हाउस में कोई तकलीफ तो नहीं हुई तो उन्होंने बताया कि मैं तो श्याम जी के साथ आराम से रुका रहा। गाडगिल जी के जाने के बाद कलेक्टर ने मुझसे पूछा कि जानते हो ये कौन थे? ये बड़े वैज्ञानिक हैं। भारत सरकार की समिति के महत्वपूर्ण सदस्य हैं। उनके लिए गाड़ी का इंतजाम किया था और आप उन्हें साइकिल से घुमाते रहे?

मैंने कहा कि मैं साइकिल से गया तो उन्हें भी साइकिल से ले गया। उन्हें तो कोई शिकायत नहीं रही। कलेक्टर ने कहा, आपको कुछ भी असहज नहीं लगा? मैंने कहा कि असहज होने की क्या बात है? कलेक्टर ने हंसते हुये कहा कि आपका कुछ नहीं हो सकता।

यह था मेरा पहला परिचय, सीधे, सहज-सरल और विनम्र माधव गाडगिल जी से जो पारिस्थितकीय विज्ञान के विशेषज्ञ, अकादमिक जगत की प्रसिद्ध हस्ती, अनेकों पुस्तकों और सैकड़ों वैज्ञानिक शोधपत्रों के लेखक और भी बहुत कुछ।

दूसरी मुलाकात उत्तराखण्ड में चमोली में हुई। चमोली जिले के गोपेश्वर में पर्यावरणविद चण्डीप्रसाद भटट के यहां दस दिवसीय चिपको आंदोलन का शिविर आयोजित था। मैं एक दिन पहले पहुंच गया था। गाडगिल जी दूसरे दिन आने वाले थे। चण्डीप्रसाद जी परेशान कि आसपास कोई अच्छा होटल या रेस्ट हाउस नहीं है। इतने बड़े वैज्ञानिक को कहां रुकवाएंगे? गाडगिल जी आये और कहा कि मैं तो यहीं सबके साथ इसी कमरे में रुकूंगा। चण्डी प्रसाद जी ने तसल्ली की सांस ली। यह था गाडगिल जी, उनकी पत्नी प्रोफेसर सुलोचना गाडगिल, उनकी बेटी का पहला परिचय चिपको आंदोलन के साथियों के साथ और मेरे साथ दूसरा परिचय।

चिपको आंदोलन शिविर के दस दिनों में माधव जी से जो सबक सीखा तो उस कहावत के मायने समझ में आने लगे कि 'उसे छुट्टी न मिली जिसे सबक याद हुआ'। उसके बाद तो अनेकों सेमिनारों, गोष्ठियों, कार्यशालाओं में मुलाकातें होती रहीं। काम के अलावा बिना किसी काम के मिलने-जुलने का पर्याप्त सुख भी मिलता रहा।

मेरे हिसाब से असंख्य परिचयों से युक्त माधव गाडगिल का एक महत्वपूर्ण परिचय यह भी है कि अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धियों वाले वैज्ञानिक होने के बाद भी गांवों के गरीब मजदूरों से लगातार सीखते रहे। ऐसे ग्रामीण जो स्कूल और किताबों की दुनिया से अपरिचित लेकिन परंपरागत ज्ञान के धनी और जीवन के विश्वविद्यालय के स्नातक, के साथ भी पूरी लगन और गंभीरता से न केवल काम करते रहे। उनसे सीखे हुए सबक को अपने लेखों और पुस्तकों में आभार जताते हुए दर्ज करते रहे।

ऐसी अनूठी प्रतिभा के धनी माधव गाडगिल एक इंसान जितना इस समाज को दे सकता है उससे बहुत अधिक देकर 7 जनवरी 2026 को हमेशा-हमेशा के लिए हम सबसे दूर, बहुत दूर चले गए, कभी वापस न आने के लिए। हम उन्हें अलविदा नहीं कहेंगे, उनके काम, उनकी सीख, उनकी लगन और कुदरत से उनका इश्क हमें उनसे दूर कैसे होने देगा?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ट्रंप का डॉलर दुनिया में सौ टका खरा बना रहे

व्यंग्य

दिनेश विजयवर्गीय
लेखक व्यंग्यकार हैं।

दुनिया का हर नेता चाहता है कि उसका फोटो उसके विचार अखबार टीवी और सोशल मीडिया पर छाते रहें। पाठक और दर्शक उन्हें देखकर उनकी लोक प्रियता को सहज भाव से स्वीकारते रहें और वह लोगों की जुबान पर चर्चा में बना रहे। वह भी यही सोचता है कि इस जन्म में ही जन मन में स्थान नहीं बना पाऊंगा तो फिर कब बनाऊंगा? ईश्वर ने मुझे जो मनुष्य रूप दिया है जो बस बोल भलाई के काम से लोकप्रिय ना हो सकूं तो घमंड कर कहीं अपना रंग रूप दिखाकर छाता रहूं। आखिर जन प्रिय होने का रसानंद जो लेना है।

आज घमंड वाले रंग रूप दिखाकर यदि दुनिया में कोई मीडिया में नित छा रहा है तो वह है एक मात्र अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। जब से वह दूसरी बार राष्ट्रपति बने हैं तभी से प्रायः रोजाना अल्लम गल्लम झूठा सच्चा स्टेटमेंट देखकर अपनी पूर्व छवि को धूमल करने में लगे हुए हैं। दुनिया में कई देशों व नेताओं को अपनी हेकड़ी वाली बोली भाषा के निर्णयों से नाराज किए हुए हैं। कभी देशों में युद्ध रुकवाने की बातें करके नोबेल शांति पुरस्कार की चाह बनाए रखते हैं। उन्हें लगता है कि जैसे उन्होंने ही दुनिया में शांति स्थापित करने की और कदम बढ़ाए हैं। भले ही इसमें कोई भी सच्चाई ना हो पर वह तो इसी ख़लायात में जीने का आनंद ले रहे हैं।

पिछले कई समय से अपना बर्चस्व कायम करने के लिए वह कई देशों में टैरिफ बढ़ाने की बात करते रहते हैं ।कोई रूस से तेल खरीद रहा तो उसे भी आंखें दिखा कर तेल लेना बंद करने की धमकी दे रहे हैं। नहीं माने तो पच्चीस प्रतिशत टैरिफ और इतना ही जुर्माना लगाकर माहौल देखना चाहते हैं। वह सोचते हैं कि टैरिफ की और बढ़ोतरी से देश तिल-मिलाकर अमेरिका की शारणागत हो जाएंगे। लेकिन जब भारत जैसे स्वाभिमानी देश ने उनकी बात नहीं मानी तो टैरिफ बढ़ाकर पांच सौ प्रतिशत करने की धमकी दे रहे हैं। उनकी यही इच्छा बनी रहती है कि साम दाम दंड भेद यानी ऐन केन प्रकारेण देश को झुकाकर अमेरिका की श्रेष्ठता दुनिया में कायम रहे। वह बिल्ली के भाग से छींके के टूटने की कल्पना कर रहे हैं,उनका डॉलर दुनिया में सौ टका खरा बना रहे है।

वह अपनी दादागिरी पर उतर आये। पिछले दिनों वेनेजुएला के राष्ट्रपति व उनकी पत्नी को शक्ति के बल पर अमेरिका ले आये है। सारे अंतरराष्ट्रीय नियमों को धता बता कर यह सब कार गुजारी कर रहे हैं। तेल की बात की आड़ में नशे की खेप वाली बातों का दोषारोपण कर उसे आरोपित कर रहे हैं । अब अपना अधिकार जताने के लिए उनकी ग्रीनलैंड पर भी अपना अधिकार कायम करना चाहते हैं। यानी दुनिया में कहीं भी अमेरिका की पकड़ सहज हो जाए । वह पर दुनिया में सबसे अधिक संसाधनों पर कब्जा कर संपन्नता में श्रेष्ठता कायम कर सके।

अपने क्रोधी अविवेकी व्यवहार के चलते ट्रंप आज अपने ही देश में विवादित होते जा रहे हैं । दुनिया भी अब जागरुक और सचेत होकर उनकी हर अंतरराष्ट्रीय गतिविधि पर सोचने लगी है। पर फिलहाल दुनिया कुछ भी सोचे, ट्रंप कहीं अपनी सनकी बुद्धि से कोई अप्रिय निर्णय लेकर दुनिया को युद्ध के राह पर तो खड़ा तो नहीं कर रहे। क्या होगा भविष्य में यह तो आने वाला समय बतायेगा। पर उनकी बातों और व्यवहार से यह तो निश्चित है कि वह अपनी बीन बजाते रहेंगे। चाहे कोई सुने या ना सुने। पर वह दुनिया को। सुनाने का प्रयास तो करते ही रहेंगे।

बिलासपुर घटना

संदीप सृजन

लेखक स्तंभकार हैं।

साहित्यिक मंच पर सत्ता का दुरुपयोग

घटना की शुरुआत सेमिनार के दौरान कुलपति के अध्यक्षीय उद्बोधन से हुई। प्रोफेसर चक्रवाल अपने भाषण में विषय से हटकर कुछ हास्यपूर्ण टिप्पणियां कर रहे थे। मंच पर बैठे मनोज रूपड़ा, जो सहित्य अकादमी द्वारा आमंत्रित अतिथि थे, ने कुलपति को कहा कि वे विषय पर केंद्रित रहें। कुलपति ने पहले रूपड़ा से पूछा कि क्या वे बोर हो रहे हैं, जिस पर रूपड़ा ने हामी भरी और कहा कि भाषण विषय से भटक रहा है। इससे कुलपति भड़क गए। उन्होंने माइक्रोफोन पर रूपड़ा को अपमानजनक शब्द कहे, जैसे कि उन्हें 'समझ नहीं है कि कुलपति से कैसे बात करनी चाहिए,' और उन्हें तुरंत बाहर जाने का आदेश दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने आयोजकों को निर्देश दिया कि भविष्य में रूपड़ा को कभी न बुलाया जाए। इस दौरान मंच पर हंगामा मच गया, और कई अतिथि साहित्यकारों ने विरोध में सेमिनार बीच में ही छोड़ दिया।

हाल ही में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर स्थित गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित एक राष्ट्रीय सेमिनार के दौरान हुई घटना ने पूरे साहित्य जगत को हिला दिया। 7 जनवरी 2026 को 'समकालीन हिंदी कहानीः बदलते जीवन संदर्भ' विषय पर सहित्य अकादमी, नई दिल्ली और विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से एक सेमिनार आयोजित किया गया था। जिसमें कथाकार मनोज रूपड़ा और विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल के बीच यह घटना हुई, जिसमें कुलपति ने रूपड़ा को सार्वजनिक रूप से अपमानित करते हुए मंच से बाहर कर दिया। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिससे साहित्य जगत में व्यापक आक्रोश फैला हुआ है। यह घटना न केवल व्यक्तिगत अपमान का मुद्दा हैं, बल्कि अकादमिक स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की आजादी और साहित्यिक मंचों की गरिमा से जुड़ा हैं।

घटना की शुरुआत सेमिनार के दौरान कुलपति के अध्यक्षीय उद्बोधन से हुई। प्रोफेसर चक्रवाल अपने भाषण में विषय से हटकर कुछ हास्यपूर्ण टिप्पणियां कर रहे थे। मंच पर बैठे मनोज रूपड़ा, जो सहित्य अकादमी द्वारा आमंत्रित अतिथि थे, ने कुलपति को कहा कि वे विषय पर केंद्रित रहें। कुलपति ने पहले रूपड़ा से पूछा कि क्या वे बोर हो रहे हैं, जिस पर रूपड़ा ने हामी भरी और कहा कि भाषण विषय से भटक रहा है। इससे कुलपति भड़क गए। उन्होंने माइक्रोफोन पर रूपड़ा को अपमानजनक शब्द कहे, जैसे कि उन्हें 'समझ नहीं है कि कुलपति से कैसे बात करनी चाहिए,' और उन्हें तुरंत बाहर जाने का आदेश दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने आयोजकों को निर्देश दिया कि भविष्य में रूपड़ा को कभी न बुलाया जाए। इस दौरान मंच पर हंगामा मच गया, और कई अतिथि साहित्यकारों ने विरोध में सेमिनार बीच में ही छोड़ दिया।

मनोज रूपड़ा एक प्रतिष्ठित हिंदी साहित्यकार हैं, जिनकी कई कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी रचनाएं अधिकांश भारतीय भाषाओं में अनुवादित हैं, और वे वनमाली कथा सम्मान, इंदु शर्मा कथा सम्मान, पाखी सम्मान जैसे पुरस्कारों से सम्मानित हैं। रूपड़ा छत्तीसगढ़ के दुर्ग-भिलाई क्षेत्र से जुड़े हैं और वर्तमान में चित्रकला में भी सक्रिय हैं। वे सेमिनार में आमंत्रित अतिथि थे, जो सहित्य अकादमी की प्रतिष्ठा को दर्शाता है। दूसरी ओर, कुलपति आलोक कुमार चक्रवाल गुजरात की सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी से हैं, जहां वे प्रोफेसर थे। घटना के बाद उन्होंने अपना बचाव किया और कहा कि मामला अधिक बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है।उन्होंने आरोप लगाया कि रूपड़ा उनके भाषण के दौरान फोन देख रहे थे और असम्मानजनक व्यवहार कर रहे थे। कुलपति ने कहा कि उन्होंने सिर्फ पूछा था कि क्या सब ठीक है या बोर हो रहे हैं, लेकिन रूपड़ा के जवाब से उन्हें मंच का अपमान लगा।

सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद, कई संगठनों ने रायपुर और बिलासपुर में विरोध प्रदर्शन किया और कुलपति को हटाने की मांग की। यह घटना साहित्य, कला और संस्कृति के प्रति सम्मान की कमी को दर्शाती है। यह घटना पूरी तरह निंदनीय है क्योंकि यह अकादमिक मंचों पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन है। साहित्यिक सेमिनार विचार-विमर्श के लिए होते हैं, न कि पदानुक्रम की प्रदर्शनी के लिए। कुलपति का व्यवहार अहंकारपूर्ण रहा, जो एक शिक्षण संस्थान के प्रमुख के लिए अनुचित है। रूपड़ा ने सिर्फ विषय पर केंद्रित रहने की सलाह दी, जो कोई अपमान नहीं था, बल्कि एक वैध टिप्पणी थी। कुलपति का उन्हें बाहर निकालना और अपशब्द कहना सत्ता के दुरुपयोग का उदाहरण है।

साहित्य जगत में यह घटना एक पैटर्न का हिस्सा लगती है। पिछले वर्षों में बुद्धिजीवियों पर हमले हुए हैं, जैसे डॉ. नरेंद्र दाभोलकर, गोविंद पानसारे, कन्नड़ लेखक कलबुर्गी और पत्रकार गौरी लंकेश की हत्याएं, जिनके पीछे कथित तौर पर कुछ संगठन थे। ऐसे में साहित्यकारों को सरकारी कार्यक्रमों में भाग लेने से पहले सोचना चाहिए। यह घटना साहित्य की स्वायत्तता पर सवाल उठाती है और युवा लेखकों को हतोत्साहित कर सकती है। इससे विश्वविद्यालय की छवि भी खराब हुई है। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय का नाम संत गुरु घासीदास से जुड़ा है, जिनका संदेश 'मनखे-मनखे एक समान' था, लेकिन यहां पदानुक्रम ने समानता को कुचल दिया। यह घटना साहित्य जगत में असहिष्णुता की बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाती है, जहां आलोचना को अपमान माना जाता है।

साहित्य जगत में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए बहुआयामी कदम उठाने चाहिए। विश्वविद्यालयों में कुलपतियों की नियुक्ति प्रक्रिया में सांस्कृतिक और अकादमिक संवेदनशीलता को शामिल करें। यूजीसी और शिक्षा मंत्रालय को दिशानिर्देश जारी करने चाहिए कि मंच पर असहमति को सम्मान दिया जाए। कुलपतियों के लिए अनिवार्य ट्रेनिंग कार्यक्रम शुरू करें, जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर जोर दिया जाए। सहित्य अकादमी और साहित्यिक व संस्कृति मंच जैसे संगठनों को ऐसे कार्यक्रमों का बहिष्कार करना चाहिए जहां राजनीतिक हस्तक्षेप हो। ऐसी घटनाओं पर शिकायत तंत्र मजबूत करना चाहिए, विश्वविद्यालयों में ओम्बड्समैन नियुक्त करें जो अपमान की शिकायतों की जांच करे। अगर अपमान सिद्ध हो, तो कुलपति जैसे पदों पर दंडनीय कार्रवाई हो। रूपड़ा मामले में भी जांच समिति गठित होना चाहिए।

साहित्य जगत ऐसे वर्कशॉप आयोजित करें जहां असहिष्णुता के खिलाफ चर्चा हो। युवा लेखकों को सशक्त बनाएं ताकि वे अपनी आवाज उठा सकें। मीडिया और सोशल मीडिया का उपयोग करके ऐसी घटनाओं का प्रचार करें, ताकि सार्वजनिक दबाव बने। व्यक्तिगत स्तर पर लेखकों को राजनीतिक संदर्भ समझकर कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए। अगर अपमान हो, तो तुरंत विरोध करें, जैसे कि इस घटना में कई अतिथियों ने किया। कुलपतियों जैसे पदाधिकारियों को आत्म-मंथन सिखाएं कि सत्ता अस्थायी है, लेकिन साहित्य अमर रहता है। इन कदमों से साहित्य जगत को सुरक्षित बनाया जा सकता है, जहां विचारों का आदान-प्रदान बिना भय के हो। बिलासपुर की यह घटना एक चेतावनी है कि साहित्यिक मंचों पर सत्ता का दुरुपयोग न हो। मनोज रूपड़ा का अपमान न केवल व्यक्तिगत था, बल्कि पूरे साहित्य जगत का था। स्पष्ट है कि कुलपति का व्यवहार अनुचित था, और इससे सबक लेकर भविष्य में नीतियां बनानी चाहिए। साहित्य स्वतंत्रता का प्रतीक है, इसे बनाए रखने के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी हैं।

सरोकार

डॉ. चन्दर सोनाने

लेखक मप्र जनसंपर्क के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

गाँवों में एक तिहाई लोगों को स्वच्छ पानी मयस्सर नहीं

ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल के हालात बयां करने वाली यह खबर केन्द्र सरकार की है। हाल ही में 4 जनवरी 2026 को जल जीवन मिशन की फंक्शनैलिटी असेसमेंट रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में 36.7 प्रतिशत पेयजल सैंपल असुरक्षित पाए गए हैं। इसको इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि पानी का हर तीसरा गिलास पीने योग्य नहीं पाया गया है। जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर तक साफ पानी पहुँचाने के दावे की हकीकत केन्द्र की उक्त रिपोर्ट में हाल ही में सामने आ गई है।

मध्यप्रदेश के इन्दौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी पीने से 18 लोगों की जान जाने के बाद अब एक और खबर आई है वह यह कि मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में 36.7 प्रतिशत जगह नल का पानी पीने योग्य नहीं पाया गया। विश्व में भारत की अर्थव्यवस्था चौथे स्थान पर होने के दावे के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की यह खबर शर्मनाक है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल के हालात बयां करने वाली यह खबर केन्द्र सरकार की है। हाल ही में 4 जनवरी 2026 को जल जीवन मिशन की फंक्शनैलिटी असेसमेंट रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में 36.7 प्रतिशत पेयजल सैंपल असुरक्षित पाए गए हैं। इसको इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि पानी का हर तीसरा गिलास पीने योग्य नहीं पाया गया है। जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर तक साफ पानी पहुँचाने के दावे की हकीकत केन्द्र की उक्त रिपोर्ट में हाल ही में सामने आ गई है।

केन्द्र सरकार ने सितम्बर-अक्टूबर 2024 में मध्यप्रदेश के 15 हजार से ज्यादा ग्रामीण क्षेत्रों से पीने के पानी के सैम्पल लिये थे। अनेक सैंपलों में बैक्टीरिया और रासायनिक गड़बड़ियाँ पाई गई। देश में सबसे स्वच्छ शहर इन्दौर जिले में 100 प्रतिशत घरों में नल कनेक्शन होने के बावजूद 33 प्रतिशत घरों में ही पीने योग्य पानी पहुँच रहा है ! अनूपपुर और डिंडोरी जिले में तो और भी खराब हालत है। इन दोनों जिलों में एक भी सैम्पल सुरक्षित नहीं मिला। बालाघाट, बैतूल और छिंदवाड़ा जिले में 50 प्रतिशत से ज्यादा सैम्पल दूषित मिले। अन्य जिलों की भी कमोबेश यही स्थिति है। ये आँकड़े प्रदेश सरकार के लिए शर्मनाक है।

केन्द्र सरकार की महत्वाकांक्षी और अत्यन्त महत्वपूर्ण जल जीवन मिशन के अन्तर्गत 28 जुलाई 2024 तक देशभर में 78 प्रतिशत घरों में नल चालू है। किन्तु मध्यप्रदेश में क्वालिटी चेक की कमी के कारण हर साल हजारों लोग सुरक्षित पेयजल नहीं होने के कारण बीमार हो रहे हैं। मध्यप्रदेश की इस हालत को देखते हुए केन्द्र सरकार ने मध्यप्रदेश सरकार को चेतावनी दी है कि अगर पानी की गुणवत्ता में सुधार नहीं किया तो 2026 में मिलने वाले आवंटन को घटाया जा सकता है। केन्द्र सरकार ने मध्यप्रदेश की इस स्थिति को व्यवस्था जनित आपदा बताया है।

देश के हर राज्य के ग्रामीण अंचलों में ग्रामीणों को नल द्वारा शुद्ध पेयजल मिल सके इसके लिए जल जीवन मिशन शुरू किया। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण मिशन है। किन्तु राज्यों की लापरवाही के कारण ग्रामीणों को इस योजना का पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा है। मध्यप्रदेश के संदर्भ में हम बात करें तो मध्यप्रदेश के सरकारी आँकडों के अनुसार 99.1 प्रतिशत गाँवों में हर घर जल योजना के तहत पाईप डाल दिए गए हैं। किन्तु वास्तविकता यह है कि 76.6 प्रतिशत घरों में ही सही तरीके से नल काम कर रहे हैं। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि हर चौथा घर अब भी इस महत्वपूर्ण योजना के लाभ से वंचित है।

जल जीवन मिशन की फंक्शनैलिटी असेसमेंट रिपोर्ट में हर तीसरे घर में पीने का पानी सुरक्षित नहीं पाया गया। रिपोर्ट के अनुसार 33 प्रतिशत घरों में नल का पानी गुणवत्ता परीक्षण में फेल हो गया है। यानी बड़ी आबादी को मिलने वाला पानी पीने के लिहाज से सुरक्षित नहीं है। इसके अतिरिक्त नल से दिये जाने वाले पीने के पानी की मात्रा भी तय मानक से कम पाई गई है। सरकारी मानक के अनुसार 55 लीटर पानी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन है। किन्तु मध्यप्रदेश के 30 प्रतिशत घरों को यह तय मात्रा नहीं मिल पा रही है। कई क्षेत्रों में तो पानी रोज आता ही नहीं है। यहीं नहीं पानी प्रदाय का समय भी तय नहीं है।

जल जीवन मिशन के अन्तर्गत नल से दिए जाने वाले पानी पर लोगों का पूरा भरोसा भी नहीं है। रिपोर्ट के अनुसार 63 प्रतिशत से ज्यादा परिवार पानी को उबालकर, छानकर या ट्रीट करने के बाद ही पानी का उपयोग करते हैं। यह सरकारी जल आपूर्ति प्रणाली पर भरोसे की कमी को भी दिखाता है। यही नहीं मध्यप्रदेश के 26.7 प्रतिशत स्कूलों में पानी का सैम्पल माइक्रोबॉयोलॉजिकल टेस्ट में फेल पाया गया है। अर्थात स्कूलों में बच्चों को मिलने वाला पानी भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं है।

केन्द्र सरकार की इस अत्यन्त महत्वपूर्ण जल जीवन मिशन का उद्देश्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गाँवों के लोगों को पानी के लिए भटकना नहीं पड़े और उन्हें अपने घर में ही नल से पानी मिल सके। इस पूरी व्यवस्था में सबसे बड़ी समस्या व्यवस्था की सामने आ रही है। इस मिशन में अब जो चुनौती आ रही है वह नल की नहीं है, बल्कि मेंटेनेंस, ट्रीटमेंट और मॉनिटरिंग की है। अनेक गाँवों में क्लोरीनेशन सिस्टम या तो है ही नहीं, या है तो वो पूरी तरह से सही काम नहीं कर रहा है। इसके साथ ही एक और कमी यह पाई जा रही है कि नल से मिलने वाले पानी के मासिक शुल्क की वसूली अत्यन्त कमजोर है। इससे मेंटेनेंस टिकाऊ नहीं बन पा रहा है।

इसमें कोई शक नहीं कि देश में जल जीवन मिशन का अत्यन्त महत्व है। किन्तु इसके क्रियान्वयन में अनेक कमियों में एक महत्वपूर्ण कमी यह भी है कि गांवों में इस मिशन के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी पंचायतों और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को दे रखी है। इन दोनों विभाग में समुचित समन्वय नहीं होने से इस मिशन का पूरा लाभ ग्रामीणों को नहीं मिल पा रहा है। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कर्मचारी भी पंचायत के अधीन नहीं है। पंचायतों के पास पर्याप्त आवंटन भी नहीं होता है, जिससे कि वे पानी को नियमानुसार ट्रीटमेंट कर सके और स्वच्छ जल प्रदाय कर सके। यदि लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के ग्रामीण क्षेत्र में काम कर रहे स्टाफ को पूरी तरह पंचायत के अधीन कर दिया जाए, तो वे और सही तरीके से काम कर सकेंगे। आमजन की भी यह जिम्मेदारी है कि उन्हें जब अपने घरों में ही नल से पीने का पानी मिल रहा है तो वे भी नियमानुसार निर्धारित किया गया मासिक शुल्क समय पर जमा करें। इस पूरी व्यवस्था की नियमित समीक्षा भी आवश्यक है। इससे जहाँ भी कमी पाई जाए, उस कमी को समय पर दूर किया जा सके। यह सब होगा तो निश्चित रूप से जल जीवन मिशन अपने उद्देश्यों को पूरी तरह से प्राप्त कर सकेगा, अन्यथा ऐसा ही चलता रहेगा!

पर्व विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सर्द रातों में जलने वाली खुशियों की ज्योति है लोहड़ी

पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक आत्मा में रचा-बसा यह लोकपर्व आधुनिक जीवन की आपाधापी के बीच कुछ ऐसे पल रचता है, जब लोग समय की रफ्तार को थामकर अपनेपन की गर्माहट में डूब जाते हैं। पंजाबी समाज में यह उत्सव विशेष उल्लास के साथ मनाया जाता है जबकि जम्मू-कश्मीर में इसे मकर संक्रांति के समान भाव से देखा जाता है और सिंधी समाज इसे 'लाल लाही' के रूप में एक दिन पहले धूमधाम से मनाता है। लोहड़ी वस्तुतः सर्दी के कटु स्वाद को मिठास में बदल देने वाली परंपरा है, जिसमें प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे से संवाद करते हैं। इस पर्व की जड़ें लोककथाओं और आस्थाओं में इतनी गहराई तक समाई हुई हैं कि वे समय के साथ और भी समृद्ध होती चली गई। एक लोक विश्वास इसे उस प्रसंग से जोड़ता है, जब कंस ने लोहिता नामक राक्षसी को भगवान कृष्ण के वध के लिए भेजा था लेकिन बाललीला में ही श्रीकृष्ण ने उसका अंत कर दिया।

उत्तर भारत की ठिठुरती सर्द रातों में जब कोहरा गलियों, खेतों और आंगनों पर अपनी धुंधली चादर बिछा देता है, तब एक ऐसी ज्योति प्रज्ज्वलित होती है, जो केवल लकड़ियों और उपलों से नहीं बल्कि विश्वास, परंपरा और सामूहिक आनंद से जलती है। 'लोहड़ी', यह नाम सुनते ही आग की लपटें, ढोल की थाप, लोकगीतों की गूंज और मुस्कुराते चेहरों की छवियां आंखों के सामने उतर आती हैं। पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक आत्मा में रचा-बसा यह लोकपर्व आधुनिक जीवन की आपाधापी के बीच कुछ ऐसे पल रचता है, जब लोग समय की रफ्तार को थामकर अपनेपन की गर्माहट में डूब जाते हैं। पंजाबी समाज में यह उत्सव विशेष उल्लास के साथ मनाया जाता है जबकि जम्मू-कश्मीर में इसे मकर संक्रांति के समान भाव से देखा जाता है और सिंधी समाज इसे 'लाल लाही' के रूप में एक दिन पहले धूमधाम से मनाता है। लोहड़ी वस्तुतः सर्दी के कटु स्वाद को मिठास में बदल देने वाली परंपरा है, जिसमें प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे से संवाद करते हैं।

इस पर्व की जड़ें लोककथाओं और आस्थाओं में इतनी गहराई तक समाई हुई हैं कि वे समय के साथ और भी समृद्ध होती चली गई। एक लोक विश्वास इसे उस प्रसंग से जोड़ता है, जब कंस ने लोहिता नामक राक्षसी को भगवान कृष्ण के वध के लिए भेजा था लेकिन बाललीला में ही श्रीकृष्ण ने उसका अंत कर दिया। इस विजय की स्मृति में आग जलाई गई और उल्लास मनाया गया। एक अन्य मान्यता दक्ष प्रजापति की पुत्री सती के योगाग्नि में आत्मोत्सर्ग से जुड़ती है, जहां अग्नि शुद्धि, त्याग और पुनर्जन्म का प्रतीक बनती है।

किंतु सबसे अधिक लोकप्रिय और जनमानस में गहरे पैठी कथा दुल्ला भट्टी की है, जिसे पंजाबी लोकगीतों में 'पंजाब का रॉबिनहुड' कहा जाता है। अन्याय के विरुद्ध खड़े होने और निर्बलों की रक्षा करने वाले इस लोकनायक की गाथा लोहड़ी को साहस, करुणा और सामाजिक न्याय का रंग प्रदान करती है।

लोकमान्यता है कि इसी दिन से ठंड की तीव्रता धीरे-धीरे कम होने लगती है और प्रकृति बसंत की ओर कदम बढ़ाती है। अलाव की लपटें केवल शरीर को नहीं, अंधेरे पर उजाले और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक बनकर मन को भी ऊष्मा प्रदान करती हैं।

लोहड़ी कई परिवारों के लिए जीवन के नए अध्याय का उत्सव भी बन जाती है। जहां हाल ही में विवाह हुआ हो, बेटे का जन्म हुआ हो या पहली वर्षगांठ हो, वहां यह पर्व विशेष उल्लास के साथ मनाया जाता है। रिश्तेदारों और पड़ोसियों का जमावड़ा, सजाया हुआ अलाव और लोकधुनों की गूंज, सब मिलकर माहौल को उत्सवमय बना देते हैं। आग में मूंगफली, गुड़, तिल, रेवड़ी, भुना मक्का और पॉपकॉर्न अर्पित किए जाते हैं। हंसी-ठिठोली के बीच भंगड़ा और गिद्धा की थिरकन शुरू होती है, जिसमें युवा, बच्चे और बुजुर्ग, सभी एक लय में झूमते नजर आते हैं। यह नृत्य केवल मनोरंजन नहीं बल्कि सामूहिकता का उत्सव है, जहां हर कदम में जीवन के प्रति कृतज्ञता झलकती है। दुल्ला भट्टी की कथा लोहड़ी को एक रोमांचक और भावनात्मक आयाम देती है। कहा जाता है कि गंजीबार क्षेत्र में रहने वाले एक ब्राह्मण की पुत्री सुन्दरी की सुंदरता से राजा की कुदृष्टि जाग उठी थी। भयभीत ब्राह्मण ने सुन्दरी को लेकर जंगल का रुख किया, जहां दुल्ला भट्टी का डेरा था। दुल्ला ने न केवल उसकी रक्षा की बल्कि योग्य वर खोजकर कन्यादान कराया। राजा की सेना के हमले को भी उसने अपने साथियों के साथ परास्त किया। इस न्याय और साहस की विजय पर लोगों ने अलाव जलाए, गीत गाए और नाचे। तभी से लोहड़ी के गीतों में 'सुन्दरी-मुन्दरी' की गूंज सुनाई देती है, जो आज भी अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा देती है।

लोहड़ी से पहले के दिन बच्चों के लिए किसी रोमांच से कम नहीं होते। वे घर-घर जाकर लोहड़ी मांगते हैं, गीत गाते हैं और त्योहार की दस्तक दे देते हैं। लकड़ियां और उपले इकट्ठा करने की परंपरा बच्चों में सामूहिकता और जिम्मेदारी का भाव जगाती थी, हालांकि समय के साथ यह व्यवस्था कुछ हद तक बाजार पर निर्भर हो गई है। फिर भी उत्सव का मूल भाव वही है, साझा खुशी। शाम ढ़लते ही अलाव जलता है, लोग परिक्रमा करते हैं, माथा नवाते हैं और आग के इर्द-गिर्द बैठकर गपशप करते हैं। ढ़ोल की थाप पर रात देर तक भंगड़ा-गिद्धा चलता रहता है, मानो ठंड की रात भी इस उल्लास के आगे हार मान ले। अगली सुबह जब अलाव की लपटें शांत हो जाती हैं, तब उसकी राख को लोग प्रसाद की तरह अपने घर ले जाते हैं। यह राख सौभाग्य, सुरक्षा और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है। लोहड़ी वास्तव में समाज का ऐसा दर्पण है, जिसमें अमीर-गरीब, छोटे-बड़े सभी एक साथ नजर आते हैं। यह पर्व सर्दी को विदाई देता है, फसल की बहार का स्वागत करता है और जीवन में नई आशाओं का संचार करता है। डिजिटल युग की चमक-दमक के बीच भी लोहड़ी हमें यह याद दिलाती है कि असली गर्माहट स्क्रीन की रोशनी में नहीं बल्कि मानवीय रिश्तों, परंपराओं और सांस्कृतिक जड़ों में बसती है। यही कारण है कि लोहड़ी आज भी खुशियों का संदेशवाहक बनकर हर दिल को छू जाती है, एक ऐसी ज्योति की तरह, जो सर्द रातों में भी मुस्कान जगा देती है।

दृष्टिकोण

संध्या राजपुरोहित
लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

अवसरों के बीच युवाओं के लिए गहराता संकट

भारत विश्व का सबसे युवा देश कहा जाता है। देश की कुल जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत हिस्सा 35 वर्ष से कम आयु के युवाओं का है। यह जनसांख्यिकीय संरचना किसी भी राष्ट्र के लिए विकास, नवाचार और सृजनशीलता की अपार संभावनाएँ लेकर आती है। भारत के संदर्भ में यह युवा शक्ति आज जिस सामाजिक और आर्थिक यथार्थ से गुजर रही है, वह इन संभावनाओं को अवसर के बजाय चुनौती में बदलती दिखाई दे रही है। विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी अंचलों के युवाओं के लिए मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा, बेरोजगारी और रोजगारोन्मुखी शिक्षा का अभाव उनके विकास पथ की सबसे बड़ी बाधा बन चुका है।

यह संकट केवल युवाओं की व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध सामाजिक संतुलन, आर्थिक प्रगति और राष्ट्रीय भविष्य से है। यदि समय रहते इन मुद्दों को गंभीरता से नहीं समझा गया, तो जनसांख्यिकीय लाभांश एक गहरे सामाजिक संकट में परिवर्तित हो सकता है।

नीति आयोग और जनजातीय कार्य मंत्रालय की रिपोर्टें बताती हैं कि आदिवासी अंचलों में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की सुविधाएँ अब भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई हैं। विद्यालयों की संख्या, शिक्षकों की उपलब्धता और उच्च शिक्षा तक पहुँच सीमित है। जो युवा किसी प्रकार शिक्षा पूरी भी कर लेते हैं, उनके सामने रोजगार के अवसर सीमित होते हैं। ऐसे में सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था युवाओं को जीवन और रोजगार के लिए तैयार कर पा रही है? क्या डिग्रियाँ वास्तव में रोजगार की गारंटी बन पा रही हैं?

बीते कुछ दशकों में भारत में विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। उच्च शिक्षा में नामांकन बढ़ा है, पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की संख्या भी बढ़ी है। लेकिन इसके साथ ही एक कड़वा सच भी सामने आया है शिक्षित बेरोजगारी। पीरियॉडिक लेबर फोर्स सर्वे (PLFS) और अन्य अध्ययनों से संकेत मिलता है कि बेरोजगारी की दर शिक्षित युवाओं में अपेक्षाकृत अधिक है। इसका कारण यह नहीं कि युवा मेहनत नहीं करना चाहते, बल्कि यह है कि उन्हें जो शिक्षा मिल रही है, वह बाज़ार की आवश्यकताओं और जीवन की वास्तविक जरूरतों से मेल नहीं खा पा रही है।

ग्रामीण और आदिवासी युवाओं को वर्षों की पढ़ाई के बाद जब रोजगार नहीं मिलता, तो यह अनुभव उनके भीतर गहरी हताशा और असंतोष को जन्म देता है। स्थानीय स्तर पर आजीविका के साधनों का अभाव उन्हें शहरों की ओर पलायन के लिए विवश करता है। शहरों में पहुँचकर ये युवा प्रायः अस्थायी, असुरक्षित और अल्प-वेतन वाले कार्यों में उलझ जाते हैं, जहाँ न तो भविष्य की सुरक्षा होती है और न ही सामाजिक सम्मान।

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं की बेरोजगारी दर लगातार चिंता का विषय बनी हुई है। आदिवासी बहुल जिलों में यह स्थिति और भी गंभीर है, जहाँ कृषि पर निर्भरता घट रही है, लेकिन उसके स्थान पर वैकल्पिक रोजगार विकसित नहीं हो पाए हैं। रोजगार का अभाव केवल आर्थिक असुरक्षा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह युवाओं के आत्मसम्मान, पहचान और मानसिक संतुलन को भी गहराई से प्रभावित करता है।

बेरोजगारी के लंबे दौर से गुजरते युवा स्वयं को असफल मानने लगते हैं। परिवार और समाज की अपेक्षाएँ, प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव और सीमित अवसर मिलकर मानसिक तनाव को बढ़ा देते हैं। यही तनाव धीरे-धीरे अवसाद, चिंता और आत्मविश्वास की कमी में बदल जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में प्रत्येक सातवाँ व्यक्ति किसी न किसी मानसिक स्वास्थ्य समस्या से प्रभावित है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आँकड़े बताते हैं कि आत्महत्या करने वालों में सर्वाधिक संख्या 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं का है। हमारी शिक्षा प्रणाली, जो आज भी रोजगार से सीधा संबंध स्थापित करने में असफल दिखाई देती है। डिग्रियों की संख्या में भले ही वृद्धि हुई हो, लेकिन व्यावहारिक कौशल और रोजगार योग्यता में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है। नीति आयोग और राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार भारत में केवल 5 से 6 प्रतिशत युवाओं को ही औपचारिक कौशल प्रशिक्षण प्राप्त है, जबकि विकसित देशों में यह आँकड़ा 60 से 80 प्रतिशत तक है। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा की भारी कमी है। पाठ्यक्रम स्थानीय संसाधनों, क्षेत्रीय आवश्यकताओं और श्रम बाजार की मांग से कटे हुए हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई लगातार गहराती जा रही है।

वर्तमान परिस्थितियों में रोजगारोन्मुखी शिक्षा कोई विकल्प नहीं, बल्कि समय की अनिवार्यता बन चुकी है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा का अर्थ केवल नौकरी दिलाना नहीं है, बल्कि युवाओं को ऐसे व्यावहारिक, तकनीकी और जीवन कौशल प्रदान करना है, जिनके माध्यम से वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपने समुदाय में रोजगार के नए अवसर सृजित कर सकें। विशेषकर आदिवासी और ग्रामीण अंचलों में स्थानीय संसाधनों पर आधारित शिक्षा मॉडल विकसित किए जाने की आवश्यकता है।

कृषि आधारित उद्योग, वनोपज का मूल्य संवर्धन, लघु वनोद्योग, हस्तशिल्प, हथकरघा, पशुपालन, मत्स्य पालन, ग्रामीण पर्यटन, डिजिटल सेवाएँ तथा स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े स्थानीय रोजगार आदिवासी युवाओं के लिए आजीविका के स्थायी साधन बन सकते हैं। जब शिक्षा स्थानीय जीवन, संस्कृति और अर्थव्यवस्था से जुड़ती है, तभी वह युवाओं को पलायन के बजाय अपने क्षेत्र में टिके रहने की प्रेरणा देती है।

सरकार द्वारा स्किल इंडिया, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, स्टार्टअप इंडिया, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय और जनजातीय क्षेत्रों के लिए विशेष योजनाएँ चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं से कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं, लेकिन इनकी पहुँच और प्रभावशीलता अब भी सीमित है। कई बार प्रशिक्षण और रोजगार के बीच समन्वय नहीं बन पाता, जिससे युवा प्रशिक्षण लेने के बाद भी बेरोजगार रह जाते हैं। यह स्थिति योजनाओं के प्रति अविश्वास और निराशा को जन्म देती है।

स्कूल स्तर से ही जीवन कौशल, भावनात्मक शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में परामर्श सेवाओं का विस्तार किया जाना चाहिए, ताकि युवा अपनी समस्याओं को खुलकर साझा कर सकें।

भारत का भविष्य उसके युवाओं में निहित है, लेकिन यह भविष्य तभी सशक्त और सुरक्षित होगा, जब युवा मानसिक रूप से स्वस्थ, सामाजिक रूप से सशक्त और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होंगे। अब समय आ गया है कि नीति निर्माण, सामाजिक विमर्श और विकास योजनाओं के केंद्र में युवाओं को रखा जाए। उन्हें केवल आँकड़ों और योजनाओं का लाभार्थी नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का सहभागी माना जाए। शिक्षा, रोजगार और मानसिक स्वास्थ्य को एक समग्र दृष्टि से जोड़कर ही हम एक समावेशी, संतुलित और सशक्त भारत की नींव रख सकते हैं।

जैन परिवार द्वारा देहदान करने पर प्रशासन द्वारा धार नगर में प्रथम बार गार्ड ऑफ आनर दिया गया

समाजसेवी डॉ. हीरालालजी गुप्ता के निधन होने पर परिवारजनों ने देहदान, त्वचा दान एवं नेत्रदान किए

धार। मंदसौर निवासी समाजसेवी डॉ. हीरालालजी गुप्ता का धार में इलाज के दौरान स्वर्गवास हो गया था। उनके दामाद शैलेंद्र जैन (नाकोडा वस्त्रालय, धार) एवं उनकी दोनों पुत्रियों द्वारा उनके सामाजिक कार्यो में संलग्न होने के कारण उनके देहदान, त्वचा दान एवं नेत्रदान करने निर्णय लिया गया। इस हेतु

धार मानव सेवा कल्याण समिति से संपर्क किया गया। समिति ने अल्प समय में भोज हॉस्पिटल धार के नेत्र विभाग के डॉ. सौरभ बौरासी और उनकी सहायिका के सहयोग से उनके नेत्रदान किये गए। तत्पश्चात प्रशासन द्वारा मुख्यमंत्री की घोषणा अनुसार उन्हे गार्ड ऑफ़ आनर देकर सम्मानित किया गया पश्चात उनकी देहदान यात्रा निकाली गई। फिर उनकी देह को एंबुलेंस के माध्यम से एम जी एम कालेज इंदौर भेजा गया जहाँ उनके त्वचा दान की प्रक्रिया पूर्ण की गई तत्पश्चात परिजनों द्वारा उनके शरीर को मेडिकल कालेज को सौपा गया। यह धार नगर में पहला अवसर है जब किसी देहदानी को गार्ड ऑफ आनर से सम्मानित किया गया है। धार मानव सेवा कल्याण समिति इसके पूर्व दो देहदान, एक त्वचा दान एवं 27 नेत्रदान करवां चुकी है

पुरातत्व के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए डॉ. दीपेंद्र शर्मा सम्मानित

धार। पुरातत्व के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए डॉ दीपेंद्र शर्मा को हवेलियों के प्रसिद्ध शहर डुंडलोई राजस्थान में इंटेक के चेयरमैन अशोक सिंह ठाकुर, झुंझनु कलेक्टर अरुण कुमार गर्ग द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर इंटेक झुंझनु चैप्टर के संयोजक महाराज रघुवेन्द्र सिंह डुंडलोद, विवाना म्यूजियम के संस्थापक व झुँझनु चैप्टर के सहसंयोजक अतुल खन्ना भी उपस्थित थे। इंटेक गव्हरनिंग काउंसिल के सदस्य डॉ शर्मा ने कुंभ उज्जैन पर जयतु सिंहस्थ व प्रयागराज कुंभ पर प्रयाग प्रवाह फ़िल्म के साथ ही आदिवासी आंचलिक पर्व भगौरिया पर रिसर्च डाक्यूमेंट्री फ़िल्म का निर्माण का उल्लेखनीय निर्माण कार्य किया है। डॉ शर्मा के इस सम्मान पर शुभचिन्तकों ने उन्हें बधाई दी है।

60 प्लस लालबाग ग्रुप ने श्री विवेकानंद जयंती समारोह माल्यार्पण कर मनाया

धार। लालबाग परिसर में 60 प्लस लालबाग ग्रुप ने स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर स्वामी जी के जन्मोत्सव पर उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया तथा स्वामीजी के पदचिन्हों पर चल कर सेवा और सदभावना का संकल्प लिया। इस अवसर पर श्याम अग्रवाल, नारायण कुबेर जोशी,प्रवीण गोधा, ओम अग्रवाल,नंदकिशोर उपाध्याय, महेश माहेश्वरी , रमेश जोशी ,कीका भाई ,पीठावाला सभी वरिष्ठजनों के सानिध्य में मनाया। मीडिया प्रभारी मनीष सिसोदिया ने यह जानकारी दी।

आज होगा मेले का समापन

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

बैतूल। मोटे अनाज (मिलेट्स) को प्रोत्साहन देने और स्थानीय महिला उद्यमियों को बाजार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शहर के ओपन ऑडिटोरियम बैतूल तीन दिवसीय श्री अन्न मिलेट्स मेला का आयोजन किया जा रहा है। प्रत्याशा फाउंडेशन, ताप्ती दर्शन ट्रस्ट और किसान कल्याण एवं कृषि विभाग बैतूल द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मेले के द्वितीय दिवस संभागायुक्त नर्मदापुरम कृष्णगोपाल तिवारी एवं पुलिस महानिरीक्षक मिथिलेश कुमार शुक्ला ने श्री अन्न मिलेट्स मेले का अवलोकन किया। इस अवसर पर नपाध्यक्ष बैतूल पार्वतीबाई बारस्कर, कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन, जिला पंचायत सीईओ अक्षत जैन, कृषि विभाग के उपसंचालक आनंद बडोनिया सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। उन्होंने मेले में लगे विभिन्न स्टालों का भ्रमण कर मिलेट्स से बने उत्पादों की जानकारी ली और उनके स्वाद का अनुभव किया। इस दौरान संभागायुक्त श्री तिवारी ने मिलेट्स को पोषण और स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताते हुए किसानों, महिला स्व सहायता समूहों द्वारा तैयार जैविक उत्पादों, हस्तशिल्प और पारंपरिक व्यंजनों की सराहना भी की। उन्होंने कहा कि मिलेट्स के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन को बढ़ावा देकर आय में वृद्धि की जा सकती है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले में मिलेट्स आधारित गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर किया जाए, जिससे आमजन में श्री अन्न के प्रति रुचि बढ़े। पुलिस महानिरीक्षक मिथलेश कुमार शुक्ला ने भी मिलेट्स को स्वास्थ्य के लिए लाभकारी बताते हुए कहा कि इस प्रकार के मेलों से लोगों को पारंपरिक और पौष्टिक आहार के महत्व की जानकारी मिलती है। उन्होंने मिलेट्स से बने उत्पादों की गुणवत्ता की प्रशंसा की। मेले में मिलेट्स से बने विभिन्न खाद्य पदार्थों के साथ-साथ इनके पोषण संबंधी लाभों की जानकारी भी प्रदर्शित की गई।

अनाजों की प्रदर्शनी के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम- तीन दिवसीय श्री अन्न मिलेट्स मेला में अनाजों की प्रदर्शनी के साथ-साथ प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है। पारंपरिक नृत्य, नुक्कड़ नाटक, गायन और बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जा रही है, जो दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। आयोजन समिति की सदस्य प्रत्याशा फाऊंडेशन से तूलिका पचौरी, प्रमिला धोत्रे एवं ताप्ती दर्शन ट्रस्ट से निमिषा शुक्ला, ममता कुबड़े ने बताया कि मेले में नगरपालिका, महिला एवं बाल विकास, कृषि और खाद्य विभाग का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। आयोजन समिति के सुनील द्विवेदी, संजय पप्पी शुक्ला ने किसानों और आमजन से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर श्री अन्न के महत्व को समझने और मेले का आनंद लेने की अपील की है।

आज होगा मेले का समापन- तीन दिवसीय श्री अन्न मिलेट्स मेला का समापन आज मंगलवार को किया जायेगा। इस संबंध में तरूणा द्विवेदी, प्रीती ओसवाल, वर्षा उमप, रूकमणि सोनारे, दीपिका भावसार, संगीताा राठौर, दीपा मालवी, दर्शना मस्की, वीणा बाघमारे, नीलू भार्गव, रीता दत्त, श्रद्धा शुक्लाा, सीता शुक्ला ने बताया कि इस अवसर पर मप्र जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त मोहन नागर, घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा सज्जन सिंह उईके, आरडी पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर व समाजसेविका ऋचु हेमंत खंडेलवाल भी शामिल होगी। बता दे कि पिछले वर्ष की सफलता के बाद इस वर्ष मेले को और अधिक भव्य स्वरूप दिया गया है। मेले में ज्वार, बाजरा, कोदो, कुटकी, रागी और कांगनी से बने विभिन्न व्यंजनों के स्टॉल लगाए गये। साथ ही स्व-सहायता समूह की महिलाओं द्वारा निर्मित हस्तशिल्प, अचार, पापड़ और जैविक अनाज भी बिक्री के लिए उपलब्ध है। मेला प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से रात 9 बजे तक संचालित हो रहा है। जिसमें प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग भी पहुंच रहे है और मिलेट्स का आनंद ले रहे है।

सोहागपुर के निकट चीचली पुलिया के पास अनियंत्रित बस दूसरी तरफ पलटी, 31 यात्री घायल

सोहागपुर। आज दोपहर करीबन 12 बजे नगर के निकट चीचली पुलिया के पास अनियंत्रित बस एमपी 05 पी 0929 होकर सड़क के दूसरी तरफ पलटी गई। इससे बस में सवार करीबन 31 यात्री घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलते ही अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी, एसडीओ पुलिस संजू चौहान,नगर निरीक्षक उषा मरावी, प्रधान आरक्षक विनोद नागर, शिवशंकर, संजीव, नरेंद्र पटेल आरक्षक सुनील ओझा, विवेक, नंदकिशोर आदि पुलिस वाहन के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए।इधर घटना की खबर फैलते ही नागरिक भी हादसे को देखने पहुंच गए। घायलों को स्थानीय सामाजिक स्वास्थ्य केन्द्र प्राथमिक इलाज के लिए ले जाया गया। नागरिकों ने घायलों की मदद की । वहीं जेसीबी मशीन की मदद से बस को सीधा किया गया।घायलों में बृजेशकुमार चौधरी निवासी ग्राम काजरखेडा थार बाबई, मो. नसरत पिता नबाब खाँ निवासी हाउसिंग बोर्ड कालोनी भोपाल, गनपत सिंह निवासी उदयपुरा, राधिका अहिरवार पिता रामविलास निवासी कटियाखापा, रिशिका मेहरा निवासी किवलारी, राजकुमार शर्मा निवासी पिपरिया, जानकी राजकुमार शर्मा पिपरिया, यश राजकुमार, पवन भारतीय एवं सुरेखा बाई निवासी बिजौरी, तामिया छिन्दवाड़ा, मोहन कुशवाह निवासी सिवनीमालवा, महिमा

राठोर निवासी आटीआई नर्मदापुरम, रामचरण गिरी निवासी सेमरी हरचन्द, सूकरतीबाई निवासी जमुनिया सेमरी हरचन्द, फूलसिंह केवट, सरोज केवट, धर्मेंद्र केवट झालोन सेमरीहरचन्द, कला बाई केवट निवासी लखनपुर , नीलेश गोस्वानी निवासी शोभापुर, रीतू यादव निवासी बुधवारा नर्मदापुरम, मालतीबाई निवासी रायसेन, शिवम अहिरवार पिता निवासी ग्राम जामुनिया, बलीराम अहिरवार माखननगर सुधामा ठाकुर निवासी कलमेसरा सोहागपुर, खुमानसिंह निवासी मोकलवाडा पिपरिया,) गोलू खान निवासी किलाअन्दर विदिशा, इलायचीबाई एवं सुनील वंशकार निवासी करनपुर, बंसती वशंकार निवासी पिपरपानी बनखेड़ी, चैनसुखी यादव निवासी ग्राम मानेगांव थाना बाबई, दिव्यांश वंशकार निवासी पीपरपानी थाना बरखेड़ी हैं। पुलिस ने फरियादी राहुल पिता गन्नू लाल अहिरवार निवासी किवलारी सोहागपुर की प्राथमिकी पर बस एमपी 05 पी 0929 के चालक के विरुद्ध दर्ज कराई है । फरियादी ने रिपोर्ट में कहा है कि वह किवलारी से उक्त बस में बैठकर सोहागपुर आ रहा था। करीबन 11:30 बजे चीचली पुलिया के पास बस के चालक ने बस को तेज व लापरवाही से चलाया ।इससे बस अनियंत्रित होकर रोड की दूसरी तरफ जाकर पलट गई ।जिससे बस में बैठे महिलाओं ,पुरुषों को चोंटे आई हैं । पुलिस ने बस चालक के विरुद्ध धारा 281, 125 (ए)BNS का प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया है। उल्लेखनीय है नर्मदापुरम से पिपरिया तक चलने वाली बसें नागों तरह बलखाती तेज रफ्तार से चलती रहती हैं। इससे हादसे होते रहते हैं। ज्ञातव्य है ओवरटेक करते रहने पर नागरिकों की जान जोखिम में बनी रहती हैं।

स्वामी विवेकानंद जयंती पर स्वदेशी, स्वावलंबन व स्वास्थ्य जागरूकता का संदेश

बैतूल। विवेकानंद विज्ञान महाविद्यालय बैतूल में 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी की 163वीं जयंती उत्साह, अनुशासन और प्रेरणादायी वातावरण में मनाई गई। इस अवसर पर स्वदेशी जागरण मंच के तत्वावधान में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य युवाओं में स्वदेशी सोच, स्वावलंबन, आत्मविश्वास, राष्ट्र निर्माण एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित करना था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के रूप में जिला चिकित्सालय बैतूल की रक्तकोष अधिकारी डॉ. अंकिता सीते, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. कृष्णा खासदेव, महाविद्यालय सचिव कमलेश गड़ेकर, स्वदेशी जागरण मंच के जिला संयोजक निलेश गिरी गोस्वामी, डॉ. राहुल कावले, डॉ. विजय साबले, निर्गुण देशमुख, संजय बालापुरे, तथा भारतीय जनता पार्टी महिला इकाई की जिला अध्यक्ष श्रीमती ममता मालवीय मंचासीन रहे। अपने उद्बोधन में डॉ. अंकिता सीते ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी का जीवन आत्मविश्वास, साहस और सेवा का प्रतीक है। स्वदेशी और स्वावलंबन केवल आर्थिक अवधारणाएँ नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सशक्त नींव हैं। युवाओं को अपनी शिक्षा, कौशल और स्वास्थ्य के साथ-साथ समाज के प्रति भी

अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। कार्यक्रम के दौरान ब्लड बैंक बैतूल के सहयोग से निःशुल्क रक्त समूह परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में रक्तकोष टीम से रमेश जैन एवं राजेश बोरखेड़े ने सक्रिय सहभागिता निभाई। परीक्षण के उपरांत विद्यार्थियों को ब्लड ग्रुप कार्ड वितरित किए गए। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) अधिकारी प्रो. अनिल सोनी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. उज्जवल पांसे ने किया, वहीं आभार प्रदर्शन प्रो. सुदामा लहरपुरे द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने मनाई विवेकानंद जयंती- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बैतूल ने स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में जेएच कॉलेज के विवेकानंद पार्क में माल्यार्पण और संगोष्ठी का आयोजन किया। नगर सहमंत्री करण कोरकू ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को स्वामी विवेकानंद के विचारों और आदर्शों से प्रेरित करना था। कार्यक्रम में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रांत कार्यकारिणी सदस्य भूपेंद्र गोरले ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृती को विश्व में गौरवान्वित किया। उन्होंने उस समय भारतीय वेदांत और दर्शन का प्रचार-प्रसार किया, जब पश्चिमी देशों की नजरों में भारत असभ्य देश माना जाता था। अभाविप के पूर्व प्रांत सहमंत्री देवेंद्र धुर्वे ने कहा कि स्वामी विवेकानंद पूरे देश के युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। उनके विचार और शिक्षा करोड़ों युवाओं को प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम में नगर सहमंत्री लक्की खातरकर, नगर कलमंच प्रमुख विशाखा धुर्वे, नगर कार्यकारिणी सदस्य करीना उईके एवं सभी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

एसआईआर को लेकर भौंरा मंडल के शक्ति केंद्र पर संगठनात्मक बैठक

विधायक की मौजूदगी में बूथ स्तर की तैयारियों और कार्यप्रणाली पर हुई विस्तृत चर्चा

बैतूल/भौंरा। सोमवार को विधानसभा क्षेत्र के भौंरा मंडल अंतर्गत भौंरा शक्ति केंद्र पर एसआईआर को लेकर संगठनात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में एसआईआर टोली, बूथ अध्यक्षों एवं भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ विषय से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर गंभीरता से चर्चा की गई। बैठक में क्षेत्र की विधायक गंगा सज्जन सिंह उईके भी शामिल रहीं। बैठक में मंडल

अध्यक्ष महेंद्र सिरोठिया, मंडल की एसआईआर टोली, शक्ति केंद्र प्रभारी सहित क्षेत्रीय भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। चर्चा के दौरान बूथ स्तर पर एसआईआर से संबंधित कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई और मतदाता सूची से जुड़े कार्यों को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। कार्यकर्ताओं से जमीनी स्तर पर समन्वय बनाए रखते हुए समयबद्ध एवं त्रुटिरहित कार्य सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। इस अवसर पर विधायक गंगा सज्जन सिंह उईके ने कहा कि एसआईआर संगठनात्मक व्यवस्था को मजबूत करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे पूरी जिम्मेदारी और सतर्कता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें, ताकि संगठन का कार्य सुचारु रूप से आगे बढ़ सके। विधायक ने कहा कि बूथ स्तर की मजबूती ही संगठन की वास्तविक ताकत होती है।

संदर्भ

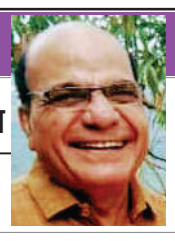

डॉ. मुरलीधर चाँदनीवाला

लेखक शिक्षाविद हैं।

स्वामी विवेकानंद शिकागो जाने से पहले मध्यप्रदेश में थे

स्वामी विवेकानंद की कहानी युवा-संघर्ष की कहानी है। यह संघर्ष मनुष्य जाति की सम्पूर्ण विजय के लिये है। भूख, दरिद्रता, डर, जड़ता, मोह, दुर्बलता और काम-वासना के कीचड़ में धँसे हुए मनुष्य को बाहर निकालने का एक जोरदार प्रयत्न किया था स्वामी विवेकानंद ने।

स्वामी विवेकानंद वर्ष 1877 में वर्तमान छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में आये थे, तब उनकी उम्र 14 वर्ष थी। रायपुर के मेट्रोपॉलिटन स्कूल में उन्होंने मिडिल कक्षा तक अध्ययन किया। वे यहाँ दो वर्ष रहे। उन्होंने संगीत की पहली शिक्षा भी रायपुर में ही प्राप्त की। उस दौरान उनके पिता विश्वनाथ दत्त अपने पेशे के कारण रायपुर में ही रहते थे। वहां से लगभग दो साल बाद विवेकानंद वापस कोलकाता लौट आये, जहाँ उन्होंने पहली बार अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के दर्शन किये, और उनके सब रास्ते खुल गये।

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय युवाओं से जो आह्वान किया, वह उच्चतम गुरु-शिष्य परम्परा से आया था। इतने आत्म-विश्वास के साथ अपनी पूरी ताकत झोंकते हुए विवेकानंद के अतिरिक्त किसी और को हमने नहीं देखा। विवेकानंद कभी अतीत में नहीं गये। वे सदैव वर्तमान से लड़ते हुए दिखाई दिये। उन्होंने परम्परागत अध्यात्म का राग अलापने की अपेक्षा युवा-जीवन की सुंदरता को अपना विषय बनाया, और बेहद शक्तिशाली विचारों से युवाओं में प्राण फूँक दिये। हिन्दुत्व के लिये चीख-पुकार मचाने की अपेक्षा विवेकानंद ने हिन्दुत्व को चरितार्थ कर विश्व के सामने जो तस्वीर पेश की, उसने हमारे भीतर स्वाभिमान को जगाया, हमें वह आत्मविश्वास दिया, जिसकी सदियों से दरकार थी। विवेकानंद ने उपनिषदों से केवल एक छोटा सा मंत्र उठाकर दिखाया। वह मंत्र था- 'अभीः'। यह निर्भय हो जाने का वह मंत्र था, जिसके दम पर स्वामी विवेकानंद ने सब कठिनाइयों को लाँघ कर विश्व-विजेता होने का गौरव प्राप्त किया।

स्वामी विवेकानंद जगद्गुरु शंकराचार्य के बाद पहले ऐसे संन्यासी थे, जिन्होंने पूरा भारत भ्रमण किया। भारत भ्रमण करते हुए 1892 में वे मध्य प्रदेश के खंडवा, महेश्वर,ओंकारेश्वर और उज्जैन भी आये थे। 1892 में विवेकानंद खंडवा में हरिदास चटर्जी के यहां ठहरे थे। खंडवा में ही उन्हें शिकागो में होने वाले धर्म सम्मेलन की सूचना मिली। धर्म सम्मेलन में जाने का निश्चय भी उन्होंने खंडवा में ही किया, लेकिन शिकागो प्रस्थान के लिये धन की व्यवस्था करना एक बड़ी भारी समस्या थी। उन्हें जूनागढ़ के दीवान ने अपने इंदौर के मित्र श्री बेदरकर के नाम एक पत्र दिया। स्वामी जी वह पत्र लेकर खंडवा से इन्दौर आये, लेकिन बेदरकर ने न तो कोई सहायता की, न उत्साह जगाया। इंदौर से ही स्वामी जी महेश्वर के घाटों के दर्शन करते हुए उज्जैन पहुंचे। यहां पर उन्होंने महाकालेश्वर के

दर्शन भी किए।

स्वामी विवेकानंद ने मालवा अंचल का भ्रमण करते हुए यहाँ के बारे महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। उन्होंने लिखा है- 'इस अंचल में एक बात देख कर मुझे बहुत दुःख होता है, वह है शिक्षा का नितांत अभाव। देश के इस भूभाग के लोग धर्म के नाम पर जो कुछ जानते हैं वह है- खाने-पीने और नहाने को लेकर स्थानीय अंधविश्वासों की एक गठरी, बस यही उनका सारा धर्म है। दुष्ट और धूर्त पुरोहितों ने वेद के नाम पर जो कुछ सिखाया, उसी का अनुसरण यहां के जनसाधारण करते हैं जो उनकी अधोगति का कारण है।'

स्वामी जी को शिकागो पहुंचाने के लिए बहुत बड़ी सहायता राजस्थान के खेतड़ी नरेश अजीत सिंह जी ने प्रदान की थी। 11 सितंबर 1893 को स्वामी विवेकानंद ने वहाँ धर्म सम्मेलन में वह ऐतिहासिक भाषण दिया, जिससे विश्वभर में हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा कायम हुई, और भारत का गौरवगान होने लगा।

स्वामी विवेकानंद सब सीमाएँ पार कर जाने वाले अदम्य साहसी और विलक्षण पराक्रमी थे। पश्चिम में यहाँ से वहाँ तक शौहरत हासिल करने के पश्चात् अपने ही देश में ईर्ष्यालुओं और कूपमंडूकों की भारी भर्त्सना उन्हें झेलनी पड़ी। यह युद्ध भी उन्होंने उसी तरह लड़ा, जिस तरह किसी अपराजेय योद्धा को आज भी लड़ना होता है। स्वामी जी ने अपनी समरनीति में समझौते नहीं किये,अपितु सिंहगर्जना से नकारात्मक शक्तियों को सावधान किया।

स्वामी विवेकानंद किसी चक्रवर्ती सम्राट् से भी ऊपर के सोपान पर खड़े थे। उन्होंने हिमालय की कन्दराओं में छुप कर तपस्या में लीन होने की अपेक्षा भारत के अगणित दरिद्रनारायणों के हृदय में उतरना ज्यादा उचित समझा। गरीबों के लिये 'दरिद्रनारायण' नाम उनका ही दिया हुआ है। वे जितने अंदर थे, उतने ही बाहर। उन्होंने कोई राजनैतिक भाषण नहीं दिये, लेकिन राष्ट्रीय चेतना के लिये कर्मयोग की दीक्षा देकर युवकों में आग पैदा की। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने लिखा है कि स्वामी विवेकानंद का धर्म राष्ट्रीयता को उत्तेजित करने वाला धर्म था। नई पीढ़ी के लोगों में उन्होंने भारत के प्रति भक्ति जगाई, उसके अतीत के प्रति गौरव और भविष्य के प्रति आस्था उत्पन्न की।

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को हर हाल में शान से जीने की प्रेरणा दी,धर्म के नाम पर छल और आडम्बर से मुक्त होकर मानवता के धर्म के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का भाव जगाया। उन्होंने चरित्रवान् युवाओं के उस बड़े संगठन की आवश्यकता बताई, जिसके कन्धों पर बैठ कर भारत में बसी हुई सब जातियाँ, सब धर्म एक साथ ऊपर उठने का साहस बटोर सके।

हमारा देश यदि सचमुच जगद्गुरु कहलाने के योग्य है, तो वह केवल स्वामी विवेकानंद के कारण। दुर्लभ जीवन की सर्वांगीण प्रगति के लिये वेदान्त की शिक्षाओं का नुस्खा बता कर स्वामी विवेकानंद ने पूरे विश्व के युवाओं को जो रास्ता दिखाया, वह कठिनाइयों से भरा हुआ हो कर भी आश्वस्त करता है। संयमित चरित्र सफलता की ग्यारंटी देता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार आधुनिक सभ्यता की मांग है कि युवा उत्सर्गपूर्ण जीवन के लिये आत्म-निवेश करें।

कोई भी देश तब ही आगे बढ़ता है जब वहाँ का समाज आगे बढ़ता है: दीपक विस्पुते

भोपाल। ओल्ड कैंपियन खेल मैदान, अरेरा कॉलोनी, समिधा बस्ती में हिंदू सम्मेलन का आयोजन उत्साह, राष्ट्रभक्ति और सांस्कृतिक चेतना के वातावरण में संपन्न हुआ। सम्मेलन में नाट्य मंचन, देशभक्ति गीतों और कवि सम्मेलन के माध्यम से हजारों की संख्या में उपस्थित नागरिकों ने राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक गौरव का अद्भुत दृश्य देखा। कार्यक्रम स्थल पर पूरा वातावरण भारत माता के जयघोष और देशभक्ति के भाव से ओतप्रोत रहा।

कार्यक्रम में मंच पर कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख दीपक विस्पुते तथा प्रांत सह संघचालक डॉ. राजेश सेठी मौजूद रहे।

जनसमूह को संबोधित करते हुए दीपक विस्पुते ने कहा कि आज का दिन भी विशेष है और यह आयोजन भी विशेष है। उन्होंने कहा कि भारत भूमि परोपकार, त्याग और समर्पण की जननी है। इसी धरती पर जन्मे गुरु तेग बहादुर जी के 350वें बलिदान वर्ष को हम स्मरण कर रहे हैं, जिन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। इसी वर्ष भगवान बिरसा मुंडा के जीवन के 150 वर्ष भी पूर्ण हो रहे हैं, जिन्होंने विदेशी षड्यंत्रों और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया।

उन्होंने कहा कि 'वंदे मातरम्' को 150 वर्ष पूरे हो चुके हैं। यह केवल एक गीत नहीं, बल्कि क्रांति का उद्घोष है, जिसे सुनकर हजारों क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सौ वर्षों की यात्रा निरंतर चल रही है और प्रतिदिन विकसित हो रही है। इस यात्रा का नित्य साधना केंद्र शाखा है।

विस्पुते ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के संदेश को समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक नियमित रूप से पहुंचाने का कार्य संघ कर रहा है। कोई भी देश तभी आगे बढ़ता है जब उसका समाज आगे बढ़ता है। हमें किसी संकट के कारण संगठित नहीं होना चाहिए, बल्कि संगठन हमारा स्वभाव बनना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोई सामान्य संस्था नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का महाआंदोलन है।

पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिंदू समाज को यह सिखाया है कि स्वयं की और समाज की रक्षा कैसे की जाती है। उन्होंने कहा कि आज सनातन धर्म में हिंदुओं को जगाने के लिए हिंदू सम्मेलन आयोजित करने पड़ रहे हैं, यह अपने आप में चिंतन का विषय है।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

राष्ट्र निर्माण में करें युवा अपनी ऊर्जा का सदुपयोग, रीवा में किया सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है। हम स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे तो अपने लक्ष्यों की पूर्ति आसानी से हो सकेगी। जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो तब तक अनवरत अपने कार्य में लगे रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि सूर्य नमस्कार को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल कर स्वस्थ रहा जा सकता है और बीमारियाँ कोसों दूर रहेंगी। उन्होंने युवाओं से अपील की कि स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर मनाये जा रहे राष्ट्रीय युवा दिवस में अपने भीतर की ऊर्जा का सदुपयोग समाज एवं देश के हित में करें और देश को विश्व गुरू बनाने में योगदान दें। उन्होंने कहा कि हमें सफलता मिलने पर अहंकारी नहीं होना चाहिए और असफलता मिलने पर निराश भी नहीं होना चाहिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि जीवन में बहुत चुनौतियाँ सामने आती हैं। पूरे धैर्य के साथ इनका सामना करने की जरूरत है। उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहने की अपील करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी के कदम यदि नशे की राह की ओर बढ़ गए तो हर तरह का विकास निरर्थक हो जाएगा। उन्होंने नशे के विरूद्ध रीवा जिले में पुलिस प्रशासन द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की।

स्वामी विवेकानंद जी की जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई गई। रीवा के मार्तण्ड स्कूल क्रमांक एक ग्राउण्ड में जिला स्तरीय सामूहिक सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम किया। उन्होंने सूर्य

नमस्कार की विभिन्न मुद्राओं के साथ प्राणायाम भी किया। सामूहिक सूर्य नमस्कार कार्यक्रम में सांसद श्री जनार्दन मिश्र, विधायक मनगवां इंजीनियर नरेन्द्र प्रजापति, पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र सिंह चौहान, सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी और बड़ी संख्या में विद्यार्थी शामिल हुए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी ने बहुत कम उम्र में ऐसी ख्याति प्राप्त की जिससे दुनिया में उनका नाम हुआ। स्वामी विवेकानंद की यह भविष्यवाणी साकार हो रही है कि भारत विश्वगुरू बनेगा। 21वीं सदी में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तेजी से आगे बढ़ते हुए विश्व गुरू बनने के करीब पहुंच चुका है।

हमारा देश आर्थिक महाशक्ति के तौर पर उभरा है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी का जीवन न केवल हमें मार्ग प्रशस्त करता है वरन उनके द्वारा दिये गये वाक्य हमें जीवन में आगे बढ़ने में मददगार है। उनके जीवन चरित्र को अपने जीवन में उतारकर राष्ट्रीय युवा दिवस का उद्देश्य पूरा करने में समवेत होने का अह्वान उप मुख्यमंत्री ने किया। उन्होंने सभी को युवा दिवस की बधाई दी। इस अवसर पर सांसद जनार्दन मिश्र ने कहा कि योग हमारी सनातन परंपरा का एक अंग है। इसको अपनाने से मनुष्य स्वस्थ एवं चुस्त-दुरूस्त रहता है। उन्होंने सभी का आह्वान किया कि नियमित रूप से सुबह उठकर योग एवं प्राणायाम की प्रक्रियाएं दिनचर्या में शामिल करें।

नशा मुक्त समाज बनाने के लिए निकाली गई जन: जागरूकता रैली

सीहोर (निप्र)। सीहोर के प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस की एनसीसी, एनएसएस, रेडक्रॉस और स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा स्वामी विवेकानंद की जयंती (राष्ट्रीय युवा दिवस) के उपलक्ष्य में 'स्वस्थ युवा सशक्त भारत' के संकल्प के साथ नशा मुक्त समाज बनाने के उद्देश्य से जन-जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों की यह रैली कॉलेज से प्रारंभ हुई और नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए कॉलेज पहुंची। रैली में विद्यार्थियों ने 'नशा छोड़ो जीवन जोड़ो,'नशा मुक्त समाज 'स्वस्थ युवा सशक्त भारत' जैसे नारों के माध्यम से नशामुक्ति का संदेश दिया। रैली का मुख्य उद्देश्य युवाओं एवं आमजन को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराना तथा स्वस्थ, अनुशासित एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ रोहिताश्व कुमार शर्मा, डॉ. नितिन बताव, डॉ. तिमोथियस एक्का, एनएसएस प्रभारी श्री विशाल परमार, एनसीसी प्रभारी डॉ. सतीश शर्मा, डॉ. जितेंद्र आर्य, श्री दुष्यंत कौल, श्री सचिन जोशी, डॉ. योगेंद्र यति, डॉ. संजय पांडे, डॉ. वैशाली राठौर, श्री रकीब अहमद सहित अन्य प्राध्यापकगणों विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

रायसेन ने जबलपुर को पराजित कर सीनियर राज्य महिला हॉकी का खिताब जीता

रायसेन (निप्र)। बालाघाट के मूलना हॉकी स्टेडियम में खेली गई सीनियर राज्य महिला हॉकी चैंपियनशिप के फ़ाइनल मैच में रायसेन ने जबलपुर को 3-2 गोल से पराजित कर पहली बार विजेता बना है। पूरी चैंपियनशिप में रायसेन की बालिकाओं ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। रायसेन ज़िले की इस उपलब्धि पर कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा, पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष गुप्ता एवं जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी जलज चतुर्वेदी ने टीम के सभी खिलाड़ियों एवं प्रशिक्षक प्रहलाद राठौर को शुभकामना एवं बधाई दी।

रायसेन ने अपने पहले मैच में उज्जैन को 8 - 1 से, दूसरे मैच में देवास को 10-0 से क्वार्टर फ़ाइनल मैच में अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों से सुसज्जित ग्वालियर को 2-0 से पराजित कर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सेमीफ़ाइनल मैच में रायसेन ने भोपाल की टीम को 3-2 से पराजित कर पहली बार फ़ाइनल में प्रवेश किया। भारी संख्या में दर्शकों की उपस्थित में खेले गये फ़ाइनल मैच में रेलवे के खिलाड़ियों से सुसज्जित जबलपुर ने मैच के 7वे मिनट में अमूवी के गोल से बढ़त बनाई 10 वे मिनिट में रायसेन की कप्तान प्राशु के शानदार पास पर संस्कृति ने गोल करने में कोई गलती नहीं की और स्कोर एक-एक से

बराबर हो गया है। खेल के 17वे मिनट में रायसेन की उप कप्तान रेनू के लंबे पास और सोनिया ने सभी खिलाड़ियों को छकाते हुए बॉल संस्कृति को सौंपी और संस्कृति ने गोल कर रायसेन को 2-1 की बढ़त दिला दी।

मध्यांतर तक स्कोर रायसेन 2 जबलपुर 1 गोल रहा। दूसरे हाफ़ में खेल के 33 वें मिनट में रायसेन की पूजा के क्रॉसपास पर संस्कृति में गोल कर रायसेन को 3-1 की अजेय बढ़त दिला दी। जबलपुर में शेष 27 मिनट में रायसेन पर ताबड़तोड़ हमले कर दबाव बनाया इसी आपाधापी में खेल के 55 मिनट में जबलपुर की कुदरत ने गोल कर बढ़त को 3-2 कर दिया यही फ़ाइनल व अंतिम स्कोर रहा।

रायसेन की गोलकीपर अंकिता ने पूरी चैंपियनशिप में शानदार बचाव का बलि टीमों के हमलों को नाकाम का भाषण को विजेता बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

केंद्रीय मंत्री शिवराज ने दिल्ली में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से की मुलाकात

नईदिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह ने आज दिल्ली में वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण से मुलाकात की। श्री चौहान ने हाल के सप्ताहों में देश के विभिन्न राज्यों का दौरा किया और राज्यों के अलावा दिल्ली में भी प्रगतिशील किसानों, कृषि विशेषज्ञों, स्वयं सहायता समूहों, सहकारी संस्थाओं तथा ग्रामीण उद्योगों एवं दोनों मंत्रालयों से संबंधित राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के वरिष्ठ प्रतिनिधियों से व्यापक संवाद स्थापित किया। इन चर्चाओं से प्राप्त विचारों और सुझावों को एक समग्र कृषि एवं ग्रामीण विकास के सुझाव के रूप में तैयार कर उन्होंने वित्त मंत्री को सौंपा। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने के लिए निरंतर कार्यरत है। श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के कुशल और दूरदर्शी नेतृत्व में आगामी आम बजट किसानों और ग्रामीण समाज के लिए प्रेरक होगा।

सीएमएचओ ने की सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र समीक्षा

एक सुपरवाईजर, एक सीएचओ एवं दो एएनएम को जारी किए कारण बताओ नोटिस

बैतूल (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाडे ने 10 जनवरी को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुलताई में सीएचओ, सेक्टर सुपरवाइजर एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की समीक्षा बैठक लेकर समस्त राष्ट्रीय कार्यक्रमों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने एएनसी पंजी, हाई रिस्क महिलाओं के उपचार एवं प्रबंधन की जानकारी ली। राष्ट्रीय कार्यक्रमों की कम उपलब्धि पाए जाने पर सेक्टर सुपरवाइजर श्री विनोद कुमार वामने सेक्टर चंदोरा, श्रीमती ज्योत्सना मालवीय सीएचओ हतनापुर, श्रीमती सरिता सरोदे एएनएम हतनापुर, श्रीमती वच्छला कसारे एएनएम सांडिया को कारण बताओ नोटिस जारी किए गए।

उन्होंने अस्पताल का निरीक्षण, रसोईया में खाने एवं पीएनसी वार्ड का निरीक्षण किया। पीएनसी वार्ड में नवजात शिशु की माता को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। उन्होंने आईपीडी में भर्ती मरीजों की कम संख्या पर नाराजगी व्यक्त करते हुये खंड चिकित्सा अधिकारी को आईपीडी बढाने के निर्देश दिये। उपस्थित समस्त कर्मचारियों को राष्ट्रीय कार्यक्रमों के शतप्रतिशत उपलब्धि पूर्ण करने की शपथदिलवाई। बैठक में जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ प्रांजल उपाध्याय, डीसीएम, एमएण्डईओ, आरआई डाटा मैनेजर, सीएचओ, एएनएम एवं आशा पर्यवेक्षक उपस्थित रहे।

पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में मनाया गया विश्व हिंदी दिवस

सीहोर (निप्र)। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सीहोर के पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रभारी प्राचार्य डॉ नितिन बातव ने बताया कि विश्व हिंदी दिवस मनाने की शुरुआत सर्वप्रथम 1975 में नागपुर में की गई थी, ताकि हिंदी के प्रचार प्रसार को विश्व स्तर पर पहुंचाया जा सके। कार्यक्रम में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गणेश लाल जैन ने हिंदी निकली हुई भाषा है। जो आज हमारे सामने परिष्कृत रूप में हिंदी है। डॉक्टर सुशील चंद्र गुप्ता ने बताया कि गणना के आधार पर हिंदी विश्व की तीसरी भाषा है। डॉ. सुशीला पटेल ने बताया कि विश्व हिंदी दिवस का मुख्य उद्देश्य हिंदी का विश्व स्तर पर प्रचार प्रसार करना है, ताकि हिंदी को लोग अधिक से अधिक जाने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान विश्व भर में हो सके। डॉ. सुमन

156 स्टार्ट-अप को 2.5 करोड़ प्रोत्साहन राशि और 21 स्टार्ट-अप को 8.17 करोड़ ऋण राशि की अंतरित

उद्यमिता, नवाचार और व्यापार हमारे संस्कारों में: मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश स्टार्ट-अप राज्य स्तरीय पुरस्कार विजेता

- सर्वश्रेष्ठ युवा उद्यमी कैटेगरी : सुश्री इशिता मोदी श्री वरुण रहेजा, श्री तेजस जैन
- सर्वश्रेष्ठ महिला उद्यमी कैटेगरी : सुश्री राशि बहल मेहरा, डॉ. हिमांशा सिंह, सुश्री उर्वशी पोरवाल
- सर्वश्रेष्ठ ग्रोथ स्टार्ट-अप कैटेगरी में : श्री आरिफ कुरैशी, श्री सावन लड्डा, सुश्री आरती एवं श्री गोविंद अग्रवाल
- अर्ली स्टेट्स स्टार्ट-अप कैटेगरी : श्री पुल्ला क्रजवानी, श्री यश सेठिया, सुश्री श्रुति गर्ग
- बेस्ट इनोवेशन स्टार्ट-अप कैटेगरी : श्री भरत कृतवानी, श्री शुभम सिंह, श्री प्रतीक वत्स, श्री दीपेश श्रीवास्तव
- बेस्ट रुरल स्टार्ट-अप कैटेगरीः सुश्री वंदना मिश्रा, सुश्री आशी बिथरे, डॉ. विशेष कासलीवाल
- बेस्ट इंक्यूबेटर्स कैटेगरी : श्री रोनॉल्ड फर्नांडिस, डॉ. आकाश राय, डॉ. क्रिस्ट पॉल, डॉ. अनुराग राय

इन्हें मिला हैकेथॉन अवॉर्ड

- कोड इट कैटेगरी : विनर श्री राहुल राय, रनर-अप श्री जयेश टोटले
- बिल्ड इट कैटेगरीः विनर सुश्री मुस्कान खरे, रनर-अप सुश्री पलक रघुवंशी
- शिप इट कैटेगरीः विनर डॉ. निलय शर्मा, रनर-

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्राचीन काल से ही हम व्यापार-व्यवसाय की भरपूर समझ रखते हैं, क्योंकि पुरूषार्थ, उद्यमिता, नवाचार और व्यापार हम भारतीयों के संस्कारों में ही है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश नए-नए अवसरों का प्रदेश है। युवा ही देश को नई सोच और नई दिशा की ओर ले जाते हैं। इनके नवाचार ही विकास का आधार बनते हैं। इसलिए नवाचारों को प्रोत्साहन देना, हमने हमारा संकल्प निहित किया है। भारत में 6 करोड़ से अधिक एमएसएमई है, जो देश की जीडीपी में 30 प्रतिशत से अधिक योगदान देते हैं। कुल निर्यात में एमएसएमई की हिस्सेदारी 45 प्रतिशत तक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में स्टार्ट-अप का योगदान अतुलनीय है। भारत, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इको-सिस्टम बन चुका है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज हमारा देश, दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के सबके सहयोग से भारत जल्द ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को रवीन्द्र भवन में आयोजित 2 दिवसीय मध्यप्रदेश स्टार्ट-अप समिट-2026 को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समिट के दौरान 156 स्टार्ट-अप को 2.5 करोड़ रूपए से अधिक की प्रोत्साहन राशि तथा मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना में 21 स्टार्ट-अप को 8.17 करोड़ रूपए से अधिक की ऋण राशि सिंगल क्लिक से अंतरित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विभिन्न सफल और विकासशील स्टार्ट-अप के फाउंडर्स और इंक्यूबेटर्स को सम्मानित किया। समिट में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के साथ फेडरेशन ऑफ इंडिया एक्सपोर्ट आर्गेनाइजेशन के साथ पंचवर्षीय एमओयू सहित सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, कार्वी स्टार्ट-अप लैब्स और स्टार्ट-अप मिडिल ईस्ट के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) भी हस्ताक्षरित किये गये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश में स्थापित सफल स्टार्ट-अप पर केंद्रित एक बुकलेट का विमोचन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंच से 4 स्टार्ट-अप के फाउंडर्स को मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना एवं म.प्र. स्टार्ट-अप नीति तथा कार्यान्वयन योजना-2025 में क्रमशः बैंक ऋण और निवेश सहायता राशि प्रदान की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि युवा साथियों के स्टार्ट-अप के प्रोत्साहन के लिए यह 2 दिवसीय आयोजन अद्भुत है। अपनी क्षमता और योग्यता के बल पर भारत ने आज नया मुकाम हासिल किया है। इसमें सभी कुशाग्र बुद्धिवाले युवाओं का बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि देश के महान वैज्ञानिक डॉ. जगदीश चंद्र बोस ने सबसे पहले दुनिया को बताया कि पौधों में प्राण होते हैं। उन्होंने कैस्ट्रोग्राफी के माध्यम से पौधों जीवन से जुड़े कई रहस्यों से पर्दा उठाया था। वैज्ञानिक डॉ. बोस वर्ष 1895 में कलकत्ता में तरंगों की खोज का डेमोस्ट्रेशन किया था। इसके बाद मार्कोनी को इसी खोज के लिए नोबेल पुरस्कार मिला, यद्यपि यह खोज डॉ. बोस ने ही की थी। अंतर सिर्फ इतना था कि उनके स्टार्ट-अप को हमारे लोगों ने पहचान नहीं दिलाई। उनके कार्य को दो-दो वैज्ञानिकों ने अनुसरण किया। लेकिन अब प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में देशभर में सभी तरह के स्टार्ट-अप और रिसर्च को प्रोत्साहन मिल रहा है। वर्ष 2022 में इंदौर से इस कार्य के लिए एक पोर्टल लॉन्च किया गया। नवाचारों और स्टार्ट-अप को प्रोत्साहन देने वाली नीतियां मध्यप्रदेश में लागू हैं। आज इंदौर में ही 2200 से अधिक स्टार्ट-अप काम कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के युवा निरंतर नवाचार कर रहे हैं। राज्य सरकार जीवन की मूलभूल समस्याओं का समाधान करने के साथ सभी प्रकार के नवाचारों को भी प्रोत्साहित कर रही है। भारत को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए केन्द्र सरकार के साथ राज्य सरकारों भी लगातार प्रयास कर रही हैं। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि युवाओं के दम पर हम बहुत जल्द दुनिया की तीसरी और फिर नंबर-1 अर्थव्यवस्था बनकर रहेंगे।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री चैतन्य काश्यप ने कहा कि युवा शक्ति अपनी क्षमताओं के बल पर दुनिया को बदल सकती है। स्वामी विवेकानंद ऐसे संत थे, जिन्होंने युवा शक्ति को पहचाना और उन्हें राष्ट्र के विकास के लिए प्रेरित किया। बाल्यकाल में मिलने वाली हार-जीत से हमें भविष्य की सीख मिलती है। राज्य सरकार ने स्टार्ट-अप पॉलिसी 2025में नवाचारों को प्रोत्साहित करने की शुरुआत की है। नए विचारों के साथ स्टार्ट-अप शुरू करने वाले उद्यमियों को इन्क्यूबेशन सेंटर के माध्यम से 10 हजार रुपए की प्राथमिक सहायता प्रदान की जा रही है। राज्य सरकार हर वक्त नए स्टार्ट-अप और नए आइडियाज के साथ खड़ी है। प्रदेश में कृषि, उद्यमिता, नगरीय निकायों में नवाचारों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। मध्यप्रदेश अब नवाचारों और अवसरों का प्रदेश बन चुका है।

प्रदर्शनी का किया अवलोकन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रवीन्द्र भवन परिसर में ही सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग द्वारा स्टार्ट-अप की विशाल प्रदर्शनी का फीता काटकर शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी स्टाल्स में जाकर स्टार्ट-अप की जानकारी ली और फाउंडर्स को नवाचारों के लिए बधाई दी।

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने कहा कि स्वामी विवेकानंद युवाओं के लिए प्रेरणा थे। आज जेन-जी और जेन-अल्फा की दुनिया के युवा स्टार्ट-अप स्थापित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पहली बार 16 जनवरी 2016 को भारत में स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया की शुरुआत की। अब राज्य सरकार की नीतियां ऐसी हैं कि स्टार्ट-अप की सभी समस्याएं इनमें समाहित हो गई हैं। उन्होंने कहा कि स्टार्ट-अप को विभिन्न प्रकार के अनुदान दिए जाने के साथ कंपनी स्थापना में भी सहयोग प्रदान किया जाता है। प्रदेश में अब एक दिन में कोई कंपनी शुरू हो सकती है, जबकि जर्मनी जैसे विकसित देश में इसके लिए 22 दिन लगते हैं। देश के युवाओं की कल्पना को आकार देने का काम स्टार्ट-अप ने किया है। युवाओं के सपनों को नए पंख लग गए हैं और वे जॉब क्रिएटर बन चुके हैं। भारत अब दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इको-सिस्टम है। स्टार्ट-अप ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई ऊड़ान दी है। हमारी समस्याओं को हमारे बीच के नवाचारी उद्यमी ही समझ सकते हैं। युवा उद्यमी समाज की समास्याओं को पहचानें और स्टार्ट-अप के माध्यम से उन्हें सॉल्व करें। तकनीक से स्वयं को हमेशा अपडेट रखें। असफलता से कभी न डरें। राज्य सरकार युवाओं के साथ नवाचारी आइडियाज पर काम करने के

माता-पिता की कलम से : नई पीढ़ी के नाम एक मार्मिक संदेश

औलाद के आगे लाचार माता-पिता

मौत का अफसाना और जिंदगीभर का दर्द

पाश्चात्य संस्कृति, नाइट कल्चर और तेज रफ्तार गाड़ियों ने आज कई घरों के चिराग बुझा दिए हैं। मैं भी उन अभागे माता-पिता में से हूँ, जिसने अपना बेटा खो दिया। आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नई पीढ़ी सप्ताहांत और संडे को सुकून के बजाय पार्टियों में गुजार रही है। रात-रात भर चलने वाली पार्टियाँ, शराब, तेज रफ्तार वाहन—इन सबका खामियाजा आज हमारी युवा पीढ़ी को अपनी जान देकर चुकाना पड़ रहा है। लगभग रोज़ हम समाचार पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में पढ़ते-देखते हैं कि सड़क दुर्घटनाओं में कितने ही नौजवान असमय इस दुनिया से चले गए। रालामंडल इलाके में

मानसंधु (26) | प्रेरणा बच्चन (26) | प्रखर कासलीवाल (25)

शुक्रवार को हुआ भीषण सड़क हादसे ने सबको झकझोर दिया।

मैं आज की युवा पीढ़ी से हाथ जोड़कर कहना चाहता हूँ- नाचिए, गाइए, मौज-मस्ती कीजिए, पार्टी भी कीजिए, लेकिन उसकी एक समय-सीमा होनी चाहिए। क्या इतनी देर रात तक पार्टी करना ज़रूरी है कि माता-पिता और परिवार चैन की नींद भी न सो सकें? आज की युवा पीढ़ी ने पैसा कमाने में भले ही पुरानी पीढ़ी को पीछे छोड़ दिया हो, लेकिन जीवन की कीमत को भूलती जा रही है। जब कोई युवा चला जाता है, तो वह अकेला नहीं जाता-पूरा परिवार जीवनभर के लिए दुःख में डूब जाता है। यह समस्या केवल मेरे घर की नहीं, बल्कि आज समाज के हर दूसरे घर की है। दुर्भाग्य की बात यह है कि आज की युवा पीढ़ी न किसी की सुनती है और न ही समझती है। उन्हें लगता है कि जो वे कर रहे हैं वही सही है, जबकि उसके परिणाम पूरे समाज को भुगतने पड़ते हैं।

युवा पीढ़ी से निवेदन- अपने पैसों का सदुपयोग करें, समय का ध्यान रखें और जीवन को जोखिम में न डालें। याद रखें-रात का अंधेरा और काल किसी को माफ नहीं करता।

प्रशासन से निवेदन

- शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में रातभर चलने वाली पार्टियों पर तत्काल रोक लगाई जाए।
- गाँवों में चल रही अवैध पार्टियों की जानकारी प्रशासन तक नहीं पहुँच पाती। इस पर विशेष निगरानी जरूरी है।
- डीजे और तेज़ आवाज़ वाले कार्यक्रमों पर सख्ती हो, ताकि कई घरों के चिराग बुझने से बच सकें।
- शराब की दुकानों का समय रात्रि 9 बजे तक ही सीमित किया जाए।
- शहरों में रात 11 बजे से सुबह 4 बजे तक चलने वाले ढाबों, रेस्टोरेंट और क्लबों पर तुरंत प्रतिबंध लगाया जाए।

समाज और राजनीति से अपील

- समाजसेवी संस्थाएँ, राजनीतिक दल और जनप्रतिनिधि मिलकर जनजागरण अभियान चलाएँ और शासन-प्रशासन को इन विषयों पर कठोर निर्णय लेने के लिए बाध्य करें।
- कानून का उद्देश्य स्वतंत्रता देना है, लेकिन अनुशासन के बिना स्वतंत्रता समाज को विनाश की ओर ले जाती है।
- संयम, मर्यादा और जिम्मेदारी—यही एक सुरक्षित समाज की पहचान है।

दर्द भरी अपील

यह केवल एक पिता का दर्द नहीं, बल्कि पूरे समाज की पुकार है।
मोनिका आनंद कासलीवाल
स्वर्गीय प्रखर कासलीवाल के माता-पिता। इंदौर

एसआई ने भौजाई कहकर उड़ाया मजाक, थाने से भगाया

परिवार पर हमले की एफआईआर कराने गई थी घायल महिला, बेटे समेत अस्पताल में भर्ती

मऊगंज (नप्र)। मऊगंज जिले में बीती रात कुछ लोगों ने जमीनी विवाद के चलते मां-बेटे पर हमला कर दिया। उनके साथ मारपीट की। तलवार जैसे धारदार हथियार चलाए। बचने के लिए महिला पुलिस थाने पहुंची तो वहां मौजूद एसआई ने भौजाई कहकर उसका मजाक उड़ाया। केस को आपसी समझौते से रफा-दफा करने की बात कही। मामला रविवार रात को बनपाडर गांव का है। घायल सरिता शर्मा और उसके बेटे आकाश को रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जान से मारने की धमकी देकर भागे- सरिता शर्मा ने कहा- परिवार के ही प्रमोद पांडे, ऋषभ पांडे, श्रद्धा पांडे, राम गणेश शर्मा और रमाकांत शर्मा रविवार रात घर में घुस आए। जमीन विवाद को लेकर गालीगलौज करने लगे। बेटे आकाश ने आपत्ति जताई तो तलवार और टांगी से हमला कर दिया। मैंने बचाने की कोशिश की तो राम गणेश ने टांगी मार दी। वो लोग धमकी दे रहे थे कि सबको जान से मार देंगे। शासन-प्रशासन कोई कुछ नहीं कर पाएगा। शोर सुनकर आसपड़ोस के लोग आए तो सभी आरोपी भाग गए। इसके बाद मैं थाने पहुंची तो वहां मेरी सुनवाई नहीं हुई। मौके पर मौजूद एसआई ज्ञानेंद्र पटेल ने भौजाई कहकर मेरा मजाक उड़ाया। थाने से भगा दिया।

तहसील में पेशी के दौरान भी की थी मारपीट- सरिता ने कहा- हमारा आरोपियों से जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। उनके पिता अपने हिस्से की जमीन बेच चुके हैं। अब वे हमारी जमीन से हिस्से की मांग कर रहे हैं। तहसील में पेशियां होती हैं। कुछ दिन पहले पेशी के दौरान आरोपियों ने मेरे जेठ को बल्ला और हॉकी से मारा था।

कलेक्टर-एसपी भी नहीं सुन रहे शिकायत

सरिता ने बताया कि उन्होंने कई बार मऊगंज थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। लेकिन आरोपियों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। इससे उनके हौसले बुलंद हैं। न कलेक्टर सुन रहे हैं, न एसपी।

टीआई बोले- किसने भौजाई कहा, पता नहीं

मऊगंज थाने के टीआई संदीप भारतीय ने कहा- बीट प्रभारी एसआई ज्ञानेंद्र पटेल, बनपाडर गांव में विवेचना करने पहुंचे थे। लेकिन महिला को किसने भौजाई कहा है, इसकी जानकारी मुझे नहीं है।

वहीं, एएसपी विक्रम सिंह ने कहा- बनपाडर गांव में दो पक्षों के बीच जमीन का मामला सिविल कोर्ट में चल रहा है। सरिता शर्मा के बयान के आधार पर प्रमोद पांडे, ऋषभ पांडे, राम गणेश शर्मा और रमाकांत शर्मा के खिलाफ केस दर्ज किया है।

भोपाल में आरएसएस के शताब्दी वर्ष पर हिंदू सम्मेलन

नाटक से दिया संदेश- पाक का करीबी सहयोगी चीन, अमेरिका को भारत के हितों के खिलाफ बताया

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भोपाल में आयोजित हिंदू सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ हो गया। कैंपियन ग्राउंड के समीप हो रहे इस आयोजन की शुरुआत सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से की गई, जिसमें एक विशेष नाटक का मंचन हुआ।

नाटक के माध्यम से यह दर्शाया गया कि अमेजन, उबर, पिज्जा हट जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते उपयोग से देश विदेशी उत्पादों और सेवाओं पर लगातार निर्भर होता जा रहा है।

प्रस्तुति में यह संदेश दिया गया कि स्वदेशी विकल्पों की उपेक्षा करने से देश को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर नुकसान उठाना पड़ सकता है।

मंचन में पाकिस्तान को चीन का करीबी सहयोगी बताया गया, जबकि अमेरिका को भारत के हितों के विरुद्ध खड़ा दर्शाया गया। नाटक के जरिए यह समझाने की कोशिश की गई कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुछ शक्तियां भारत के बढ़ते प्रभाव से असहज हैं और परोक्ष रूप से देश के खिलाफ गतिविधियों में संलग्न हैं।

कार्यक्रम के दौरान स्वदेशी के महत्व को रेखांकित करते हुए रोजमर्रा के जीवन में देशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने का आह्वान किया गया। 'प्रिया' नामक नाटक के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए विदेशी वस्तुओं के बजाय स्वदेशी अपनाने का संदेश दिया गया। संघ शताब्दी वर्ष के तहत आयोजित इस हिंदू सम्मेलन में आगे भी विभिन्न सत्र, संबोधन और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तावित हैं, जिनमें धर्म, संस्कृति, राष्ट्रवाद और आत्मनिर्भरता जैसे विषयों पर विशेष फोकस रहेगा।

भाई के सामने बहन को उठा ले गया, किया रेप

बच्चे ने मां को बताई घटना ; परिजन को बीना में गंभीर हालत में पड़ी मिली मासूम

बीना (नप्र)। बीना में तीन साल की बच्ची के साथ रेप की घटना सामने आई है। बच्ची गंभीर हालत में पड़ी मिली। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया है। बच्ची आरोपी को चाचा कहकर बुलाती थी।

खिमलासा थाना पुलिस ने बताया कि रविवार शाम को तीन साल की बच्ची अपने सात साल के भाई के साथ घर के पास खेल रही थी। दोनों खेलते-खेलते करीब 300 मीटर दूर खेत में मटर खाने चले गए। यहां उनके पड़ोस में रहने वाला 28 वर्षीय युवक पहुंचा और बच्ची को उठाकर ले गया। इसके बाद बच्ची से रेप किया।

भाई की सूझबूझ से हुआ खुलासा- जब भाई अकेला घर लौटा तो उसने अपनी मां को बताया कि गांव का एक युवक उसकी बहन को अपने साथ ले गया। यह सुनकर परिजन के होश उड़ गए। उन्होंने तुरंत बच्ची की तलाश शुरू की। काफी खोजबीन के बाद बच्ची गांव में ही एक बोरिंग मशीन के पीछे गंभीर हालत में मिली।

पुलिस ने कराया मेडिकल टेस्ट- परिजन ने घटना की सूचना खिमलासा थाना पुलिस को दी। पुलिस ने बच्ची को मेडिकल परीक्षण के लिए खुरई सिविल अस्पताल भेजा। मामले की जांच कर रही एसआई प्रतिमा मिश्रा ने बताया कि आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट की धाराओं में दर्ज किया गया है।

मां बोली- मुझे देखकर भाग गया आरोपी- बच्ची की मां ने बताया- मेरे दो बेटे और एक बेटी है। घटना के समय पति फैक्टरी गए हुए थे। मैं घर में अकेली थी। बेटा और बेटी घर से थोड़ी दूर खेत में खेल रहे थे। कुछ देर बाद बेटा घर आया और बताया कि पड़ोसी युवक बहन को उठाकर बोवनी मशीन के पीछे ले गया है। यह सुनते ही मैं दौड़ते हुए मौके पर पहुंची। वहां आरोपी रामदयाल घर के पास खड़ा था, जो मुझे देखकर भाग गया।

'राष्ट्रीय युवा दिवस' बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचाने: मंत्री श्री सिंह

विद्यार्थियों के साथ किया सामूहिक सूर्य नमस्कार

भोपाल(नप्र)। प्रदेश भर में सोमवार को स्वामी विवेकानंद की 163वीं जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनायी गयी। इस अवसर पर प्रदेश के सभी स्कूलों में सामूहिक सूर्य नमस्कार का कार्यक्रम हुआ। स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह सोमवार को नरसिंहपुर जिले के राजमार्ग स्थित राव रुक्मणीदेवी पब्लिक स्कूल में आयोजित सूर्य नमस्कार कार्यक्रम में शामिल हुए और विद्यार्थियों के साथ सामूहिक सूर्य नमस्कार व योग किया। इस अवसर उपस्थित जनों ने स्वामी विवेकानंद के रिकॉर्डेड संदेश और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के रेडियो के माध्यम से प्रसारित किए गए संदेश का प्रसारण भी सुना।

मंत्री श्री सिंह ने विद्यार्थियों को योग के माध्यम से स्वस्थ रहने और स्वामी विवेकानंद के आदर्शों पर चलने की बात कही। उन्होंने कहा कि जब तक बच्चों को अपने महापुरुषों के विचारों से नहीं जोड़ा जाएगा, तब तक उनमें आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण और राष्ट्रप्रेम की भावना पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकती। राष्ट्रीय युवा दिवस बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानने, उन्हें सही दिशा देने और जिम्मेदार नागरिक बनाने का अवसर है। इसलिए आज का दिन केवल मनाने का नहीं, बल्कि स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं को बच्चों के जीवन में उतारने का संकल्प लेने का दिन है। स्वामी विवेकानंद दुनिया के ऐसे युवा सन्यासी थे, जिन्होंने अल्पायु में ही अपने विचारों, चरित्र और ओजस्वी वाणी से विश्वभर में भारत का नाम रोशन किया। उन्होंने यूरोप और अमेरिका जैसे देशों में भारत की आध्यात्मिक परंपरा, वेदांत और मानवता का संदेश पहुंचाया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारत केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और आत्मबल की भूमि है। मातृभाषा के सम्मान और भारतीय मूल्यों की दृढ़ता के साथ उन्होंने उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए का अमर संदेश दिया।

मंत्री श्री सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं, जिनके नेतृत्व में देश में नवाचार हुए, आत्मनिर्भरता आयी और प्रगति के राह पर देश अग्रसर है। उनके नेतृत्व में भारत ने वैश्विक मंच पर अपनी सशक्त पहचान बनाई है और युवा शक्ति को नई दिशा मिली है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने योग को केवल भारत तक सीमित न रखते हुए, उसे संपूर्ण विश्व की जीवनशैली के रूप में स्थापित किया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुरुआत कर उन्होंने स्वामी विवेकानंद के उस विचार को साकार किया, जिसमें शरीर, मन और आत्मा के समन्वय की बात कही गई थी। आज योग विश्वभर में भारत की सांस्कृतिक धरोहर और शांति संदेश का प्रतीक बन चुका है।

खेती के 'वैभव' का नया अध्याय

मध्यप्रदेश की सियासत में ट्रेक्टर पर सवार होकर सरकार के मुखिया ने सिर्फ सवारी नहीं की, बल्कि प्रदेश के अन्नदाता की समृद्धि का नया रोडमैप पेश कर दिया है। 'किसान कल्याण वर्ष' का संकल्प लेकर डॉ. मोहन यादव सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि उनकी प्राथमिकता की धुरी केवल किसान है।

मोहन का मंत्रालय

आशीष चौधरी

सोयाबीन के बाद अब सरसों में भावांतर योजना लागू करने का निर्णय और अगले तीन वर्षों में 30 लाख सोलर पंप लगाने का लक्ष्य, प्रदेश को कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में क्रांतिकारी कदम हैं। सरकार का यह विजन केवल वादों तक सीमित नहीं है। 16 विभागों का समन्वय, जीरो प्रतिशत ब्याज की निरंतरता और तीन बड़ी नदी परियोजनाओं से 16 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई का खाका खींचकर सरकार ने खेती के रकबे को 2.50 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाने का करिश्मा कर दिखाया है।

मलाई छोड़ 'किताबों' की शरण में चले साहब

प्रशासनिक गलियारों में अक्सर 'मलाईदार' पदों के लिए खींचतान मची रहती है। अधिकारी एड़ी-चोटी का जोर लगा देते हैं कि किसी तरह मलाई हाथ लग जाए। लेकिन, मध्य प्रदेश के प्रशासनिक इतिहास में संभवतः यह पहला मौका है जब एक 'ईमानदार' छवि वाले आईपीएस अधिकारी ने कार्यकाल पूरा होने से पहले ही स्वेच्छा से मलाईदार पद को ठुकरा दिया है। साहब अब पढ़ाई करने के लिए 'विदेशी अवकाश' पर जाने की तैयारी में हैं। जैसे ही यह खबर उड़ी कि साहब कुर्सी खाली कर रहे हैं, आईएएस लॉबी की बांछें खिल गई हैं। अब हर कोई उस विभाग में अपनी पदस्थापना के लिए 'जुगाड़' के गोटी फिट करने में लगा है। गौरतलब है कि यह मलाईदार पद 'महल' यानी सिंधिया कोटे के एक कद्दावर मंत्री के विभाग के अंतर्गत आता है। अब देखना यह है कि यह मलाई किसके हिस्से आती है और पढ़ाई पर जाने वाले साहब की जगह कौन सा 'किताबी' सूरमा पदभार संभालता है।

हिलेगी मंत्री जी की कुर्सी !

मोहन सरकार के एक कद्दावर मंत्री की रातों की नींद इन दिनों उड़ी हुई है। वजह कोई विपक्षी दल नहीं, बल्कि उनका अपना ही एक पूर्व कट्टर समर्थक है जो साइकिल चलाकर दिल्ली की दहलीज तक जा पहुंचा है। जंतर-मंतर से लेकर भाजपा के केंद्रीय गलियारों तक यह युवा कार्यकर्ता मंत्री जी की 'कथित आपराधिक मित्रता' की कुंडली खोल रहा है। लेकिन असली चटखारा तो उस वायरल ऑडियो ने दिया है, जिसमें बुंदेलखंड के एक पूर्व मंत्री इस युवा को 'सार्थक' सलाह दे रहे हैं। पूर्व मंत्री जी का कहना है कि अगर सुनवाई करानी है तो प्रधानमंत्री निवास के बाहर लगी 'घंटी' को दो बार जोरदार तरीके से बजा दो, फिर क्या दिल्ली और क्या गृहमंत्री—सबकी नजरें इनायत हो जाएंगी। अब मंत्री जी के खास सिपहसालार इस ऑडियो को बार-बार सुन रहे हैं और यह समझ नहीं पा रहे कि यह सलाह 'घंटा' बजाने के लिए है या मंत्री जी का 'बँटाढ़ार' करने के लिए।